ऐसा क्यों?

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के विभिन्न अंचलों के निर्वाचन/गठन के उपरान्त मैंने सभी अंचलों में जाने का मन बनाया जिससे मैं विभिन्न तीर्थ क्षेत्रों में कार्यरत तीर्थभक्त समाज बन्धुओं से प्रत्यक्ष संवाद कर सकूँ। मुझे इन यात्राओं के मध्य अनेक भाई-बहनों से मिलने, चर्चा करने एवं उनकी पीड़ाओं को जानने का अवसर मिला। मैं यहाँ उनमें से कुछ बातों का उल्लेख करना चाहूँगा।

1. हमारी समाज देश की सर्वाधिक शिक्षित, धनवान, उद्यमी, शाकाहारी, मर्यादित, विनम्र, स्वस्थ एवं प्रतिष्ठित समाज है। स्त्रियों को धर्माराधन के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान कर आर्यिका माता के प्रतिष्ठित एवं पूज्य पद को प्रदान करती है। पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में भगवान की माता एवं सौधर्म इन्द्र की शची इन्द्राणी बनाकर बहुमान देने वाली जैन समाज ही है। जैन परिवारों में महिलाओं को पूर्ण आदर एवं सम्मान दिया जाता है। घर की बुजुर्ग महिलायें न केवल उस घर अपितु सम्पूर्ण समाज की काकी/दादी रहती है इसके बावजूद हमारी बेटियाँ अपनी समाज के शिक्षित, विनम्र, स्वस्थ एवं कर्मठ युवाओं को छोड़कर दूसरी समाज के युवाओं का वरण कर रही हैं एवं पिछले 10-15 वर्षों के अनुभव बता रहे है कि प्रेम विवाहों के माध्यम से हुए विजातीय सम्बन्ध बहुतायत से असफल हो रहे हैं। फिर भी आज हर 10-12 परिवारों में से 1-2 परिवारों में विजातीय सम्बन्ध जरूर देखने को मिलते हैं। ऐसा क्यों? मात्र बेटियाँ ही नहीं हमारे बेटे भी विजातीय कन्याओं का वरण कर रहे हैं। जबकि हमारी बेटियाँ अधिक समर्पित एवं योग्य है। मुझे चिन्ता अपने तीर्थों की है। जब समाज ही मजबूत नहीं होगा तो तीर्थों को सम्हालेगा कौन? जैनों की जनसंख्या घट रही है। अन्य समाज में जा रही बेटियाँ तो अपने जैनत्व को खो ही रही है। आने वाली बहुओं ने पूरे परिवार की जैनत्व के प्रति आस्था एवं समर्पण को खंडित कर दिया है। विवाह के बाद कुछ वर्ष तो वे णमोकार मंत्र पढ़ती हैं तीर्थंकरों के नाम भी याद करती हैं किन्तु समय के साथ वे सब भूल जाती है एवं मिथ्यात्व का पोषण करते हुए मानव धर्म तथा नैतिक मूल्यों की बात करने लगती हैं। धीरे धीरे वे दानादि पुण्य कर्मों का भी विरोध करना शुरू कर देती हैं। तीर्थ यात्राओं के प्रति अरुचि एवं पर्यटन स्थलों की सैर उनकी प्राथमिकताऐं बन जाती है। ऐसे में हमारे तीर्थों को कैसे मिलेगा आर्थिक सहयोग एवं समर्पित कार्यकर्ता। हमें विजातीय विवाहों को रोकने हेतु सक्रिय प्रयास करने चाहिए।

2. परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जो आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर लेता है वह ही सफल रहता है। आज जीवनशैली बदल रही है। समूह में साथ साथ रहने की प्रवृत्ति के स्थान पर एकल परिवार की अभिधारणा आ गई है समारोहों में घर के बरामदों एवं हालों में रहने के बजाय लोग आज अलग अलग कमरों में रहना पसंद करने लगे हैं। सामान्य दिनों में भी घर के अलग-अलग अटैच्ड रूम में रहते हैं, अतः यह अब आदत एवं जरूरत बन गई है अतः युवा पीढ़ी को तीर्थों पर आने हेतु प्रेरित करने हेतु हमें तदनुरूप आवास व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था बनाने में परहेज क्यों? दान करने में सक्षम व्यक्ति यदि तीर्थ आयेंगे ही नहीं तो क्षेत्र चलेंगे कैसे?

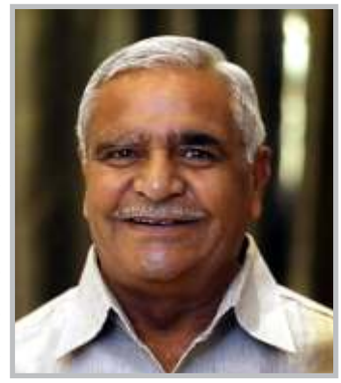

3. सुखद आवास के बाद एक नैसर्गिक जरूरत होती है भोजन की। आज की पीढ़ी घर पर भी भोजन बनाने में आलस करने लगी है तो क्षेत्र पर क्या भोजन बनायेंगी? अतः अब छोटी या बड़ी भोजनशाला एक अनिवार्य आवश्यकता है। जहाँ यात्री संख्या कम हो वहाँ किसी जैन परिवार को स्थान एवं बर्तन आदि का सहयोग देकर भोजनालय चलाने का काम दे देना चाहिए। इससे एक परिवार को रोजगार मिलेगा। यदि पर्याप्त संख्या में नियमित या ज्यादातर यात्री आते हैं तब वहाँ क्षेत्र की भोजनशाला चलानी चाहिए। अनेक समस्याओं के कारण अब क्षेत्रों की भोजनशालायें ठेके पर दी जाने लगी है। रेट कमेटी तय करती है इसमें कोई आपत्ति नहीं किन्तु -

(अ) यह ठेका किसी जैन परिवार को ही देना चाहिए जिसमें एक जैन परिवार को नियमित रोजगार मिले तथा उसका क्षेत्र से जुड़ाव रहे एवं क्षेत्र को मानवीय शक्ति के रूप में वह परिवार सदैव उपलब्ध रहे।

(ब) गुणवत्ता नियंत्रण बहुत जरूरी है। एतदर्थ कमेटी के अलग-अलग पदाधिकारियों को बिना पूर्व सूचना के कभी भी जाकर निर्धारित राशि देकर स्वयं भोजन करना चाहिए जिससे गुणवत्ता का पता लग सके? प्रति थाली शुल्क भले ही रु. 10=00 ज्यादा ले किन्तु भोजन, सादा, शुद्ध, सात्विक स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं रुचिकर होना चाहिए क्योंकि समाज के बुजुर्ग एवं युवा दोनों ही उसी भोजन को करेंगे। इसमें आलस क्यों?

मैं समझता हूँ कि समाज को इन बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए। इस जरूरी काम में उपेक्षा एवं शिथिलता क्यों?

आइये! हम सब मिलकर वर्ष 2025 में तीर्थों पर श्रेष्ठ आवास एवं भोजन व्यवस्था बनायें, तीर्थों के महत्त्व एवं अतिशय को प्रचारित करें तथा 2025 में अपने इष्ट मित्रों, सगे सम्बन्धियों में विजातीय विवाहों को प्रश्रय न दें।

आपके सुझावों का स्वागत है।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं, भगनियों,

सादर जय-जिनेन्द्र !

प्रारम्भ हो रहे ईस्वी सन २०२५ की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं ! यह नूतन वर्ष हम सभी के जीवन में मंगलदायी एवं उत्साह वर्धक होवे !

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भी निरंतर प्रगति कर रही है सभी तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन में तल्लीनता के साथ कार्यरत है। जिसमें हमें हमारे आचार्यों, मुनि-महाराजों, साधु-साध्वियों, भट्टारकगणों, दानी महानुभावों, कार्यकर्ताओं एवं सकल जैन समाज का सहयोग प्राप्त हो रहा है। ईस्वी सन १९०२ में स्थापित यह राष्ट्रीय संस्था सभी प्रकार के मतभेदों से ऊपर उठकर, एक मात्र तीर्थों की सेवा, संरक्षण के उद्देश्य से निरंतर कार्य करती आ रही है हर्ष है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने १२५ वें स्थापना वर्ष में प्रवेश करने जा रही है जिसे कमेटी की ओर से पूरे साल भर शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के रूप में मनाये जाने की भव्य तैयारियां चल रही है चूंकि तीर्थक्षेत्र कमेटी का प्रथम अधिवेशन सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी में आयोजित किया गया था अतः हम भी इस स्थापना के आयोजन का प्रारम्भ मथुरा जी से करेगें जो पूरे वर्ष भर मनाया जायेगा और इसका समापन शाश्वत भूमि श्री सम्मेदशिखर जी पर बड़े ही धूमधाम से किया जायेगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिगम्बर जैन समाज की एकमेव प्रतिनिधि संस्था है और यह कार्यक्रम सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज का है अतः मेरा आप सभी से आग्रह है कि शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के इस भव्याति-भव्य आयोजन में सम्मिलित होकर उत्साह वर्धन के साथ संस्था का संघटन सुदृढ़ बनायें।

हमारे चलते फिरते तीर्थ कहे जाने वाले परमपूज्य आचार्य, महाराजों, साधु-साध्वियों जो निरंतर विहार कर धर्म प्रभावना में तल्लीन रहते हैं जिनके निमित्त से अनेकों धार्मिक अनुष्ठान, पंचकल्याणक आदि भव्य-आयोजन आयोजित हो रहे हैं। इसी श्रृंखला में महामस्तकाभिषेक भगवान पार्श्वनाथ जी, 'सुमेरु पर्वत' का उद्घाटन और माता की स्थापना नवग्रह तीर्थक्षेत्र, वरूर, हुबली, जिला धारवाड़, कर्नाटक, में 15 से 26 जनवरी 2025 तक संपन्न होने जा रहा है। 405 फीट की ऊंचाई पर स्थित 'सुमेरु पर्वत' का उद्घाटन सांस्कृतिक संरक्षण और राष्ट्रीय गौरव की दिशा में हमारी सामूहिक यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस आयोजन में 8-10 देशों से 18 आचार्यों सहित कम से कम 200 दिगंबर जैन मुनियों की भागीदारी तीर्थंकर का लेजर, महामस्तकाभिषेक, पहली बार 10000 बच्चों का उपनयन संस्कार (धागा संस्कार) किया जाएगा। भगवान पार्श्वनाथ जी का महामस्तकाभिषेक, यह आयोजन 12 वर्षों में केवल एक बार आयोजित किया जाता है। भगवान पार्श्वनाथ जी का महामस्तकाभिषेक, जैन परंपरा में भगवान बाहुबली जी के श्री श्रवणबेलगोला में होने वाले उत्सव के बाद दूसरे स्थान पर है। भगवान पार्श्वनाथ जी का पिछला महामस्तकाभिषेक वर्ष 2007 में आयोजित किया गया था, जिसमें लाखों भक्तों और श्रद्धालुओं ने भाग लिया था। इस महा-आयोजन के साक्षी बनने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो रहा है।

इस आयोजन में विशेष रूप से परमपूज्य संस्मरण मुनि श्री कुन्थुसागर जी महाराज एवं प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज का मंगल आशीर्वाद हमें प्राप्त होगा। सकल जैन समाज से आग्रह है कि आप सब इस भव्य आयोजन में सम्मिलित होकर धर्मलाभ लेवें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वाधान में श्री सम्मेदशिखर जी, श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर केस माननीय सुप्रीम कोर्ट में तथा श्री ऋषभदेव केशरिया जी एवं श्री गिरनार जी केस हाईकोर्ट में लंबित हैं। श्री सम्मेदशिखर जी केस जो सुप्रीम कोर्ट में अंतिम सुनवाई के लिए २०२५ में पुनः बेंच पर आने की सम्भावना है। जिसके लिए हम अपनी भरपूर तैयारियां कर रहे हैं जिसमें आर्थिक सहयोग के लिए समाज से अपेक्षा है।

हमें अत्यंत हर्ष है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक योजना में बहुत से क्षेत्र मंदिरों ने आगे आकर हमारा सहयोग किया है जिनके प्रति हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं साथ ही मेरा देश के सभी दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों, प्रतिष्ठित मंदिरों के पदाधिकारियों, ट्रस्टियों से अपील है तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक योजना को गति प्रदान करते हुए आप सभी अपने-अपने तीर्थों / मंदिरों में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक-एक गुल्लक (दान-पात्र) अवश्य रखें एवं उससे प्राप्त राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी के बैंक खाते में जमा करवाकर इस योजना में सहयोग कर तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण-संवर्धन में अपना अमूल्य सहयोग देकर सहभागी बनें।

हमारा प्रयास प्रत्येक दिगम्बर जैन परिवार को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से जोड़ना है ताकि हम अपना बल, अपना वर्चस्व, अपना अस्तित्व एकता के साथ सारी दुनिया को दिखा सकें।

पुनश्च आप सभी को ईसवी सन २०२५ नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

मेरी दक्षिण यात्रा

हमारे देश भारत का दक्षिणी भाग, जिसे हम दक्षिण भारत की संज्ञा देते हैं, महान जैनाचार्यों की कर्मभूमि रही है। वर्तमान गणतंत्रात्मक व्यवस्था में कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा आदि प्रान्त दक्षिण भारत के अन्तर्गत आते हैं। इस वर्ष अगस्त एवं नवम्बर 24 मासों में मुझे 2 बार दक्षिण भारत जाने का अवसर मिला। एक बार तमिलनाडु एवं दूसरी बार कर्नाटक। मैं यहाँ यात्रा की कुछ यादों को लिपिबद्ध कर रहा हूँ।

1. अरिहन्तगिरि यात्रा: जैन दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. दिलीप धींग जी की प्रेरणा से श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ-तमिलनाडु ने श्रमण संघ के युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज (श्वे.) के सान्निध्य में 'जैन धर्म एवं विज्ञान' शीर्षक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 9-10 अगस्त 24 को मुझे **जैन गणित पर 3 व्याख्यान** देने हेतु आमंत्रित किया गया। मैंने भी अरिहन्तगिरि के दर्शन की अभिलाषा में चेन्नई में इन 3 व्याख्यानों को देने की स्वीकृति प्रदान कर दी। मैं सपत्नीक 9 अगस्त को प्रातः 6.55 की Indigo Flight से हैदराबाद पहुँचा। हम पुनः 10.00 पर हैदराबाद से चलकर लगभग 11.15 पर चेन्नई पहुँचे। वहाँ लायन नेमीचन्द सिंघवी (जैन) अपने मित्रों सहित विमान तल पर स्वागत हेतु उपस्थित थे। हम लोग वहाँ से चलकर विश्राम स्थल (एक अतिथि भवन) पर पहुँचे जहाँ डॉ. दिलीप धींग अपने साथियों सहित मौजूद थे। भोजनोपरान्त हम लोगों ने पूज्य युवाचार्य श्री के दर्शन किये। तदपुरान्त **'Secrets of Mathematics in Jainism'** विषय पर लगभग 300-400 विद्यार्थियों के मध्य व्याख्यान दिया। पुनः 10 अगस्त प्रातः की प्रवचन सभा में **जैन गणित के महत्त्व एवं उसके अध्ययन की प्रासंगिकता** पर लगभग 45 मिनट का व्याख्यान दिया। श्री महेन्द्रऋषिजी का वात्सल्य एवं चेन्नई समाज की जिज्ञासु प्रवृत्ति, गुण ग्राहकता तथा आदर का भाव श्लाघनीय रहा। सायंकाल पुनः हमने जिज्ञासु एवं स्वाध्यायी बन्धुओं के मध्य **जैन आगमों में गणित** पर प्रस्तुति दी। चेन्नई समाज के मध्य हम जैन गणित के महत्त्व, आधुनिक युग में उसका महत्त्व एवं प्रासंगिकता स्थापित कर सके इसका संतोष रहा। शून्य का आविष्कार जैन परम्परा का है यह जानकर युवाओं को बहुत प्रसन्नता रही। संक्षिप्ततः बहुत व्यस्त एवं उपयोगी समय बीता।

पंचदेवी मन्दिर में विराजमान मां पद्मावती

सायंकाल हम लोग खण्डेलवाल दि. जैन मन्दिर गये। वहाँ की भव्य मूर्तियों एवं वर्षायोगरत गणिनी आर्यिकारत्न श्री विशुद्धमती माता जी (एटा वाली) की 5 शिष्याओं (आर्यिका माताओं) के दर्शन एवं वन्दन का अवसर मिला। रात्रि में श्री कमल जी ठोलियां एवं 11.08.24 की प्रातः भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन सा. के निवास पर तीर्थों एवं समाज के विकास से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चायें की। 11.08.24 की प्रातः हम श्रीमती सरिता जी से मार्गदर्शन प्राप्त कर कार से अरिहंतगिरि पहुँचे। क्षेत्र की भव्यता, भगवान जिनेन्द्रदेव का नवग्रह मंदिर, पंच देवियों की मूर्तियाँ, सबकुछ अत्यन्त व्यवस्थित एवं विशाल। पूज्य भट्टारक श्री धवलकीर्ति स्वामी जी का वात्सल्य अद्भुत है। सायंकाल हमने पहाड़ पर गुफाओं में बनी मूर्तियों के भी दर्शन किये। पहाड़ की मूर्तियाँ चूना पत्थर की होने के कारण निरन्तर क्षरित हो रही है। पुरातत्त्व विभाग को इनके संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। हमारा मठ इस ओर प्रयत्नशील है। मठ में संचालित विशाल विद्यालय (स्कूल) 700-800 छात्रों के साथ अंचल की अच्छी सेवा कर रहा है। यहाँ के पंच देवी मन्दिर के प्रति स्थानीय जनों में अच्छी आस्था है। पूज्य स्वामी जी ने इस क्षेत्र के अनेकों चमत्कार हमें बताये तथा नवग्रह मन्दिर के सभी 9 जिनबिम्बों के अभिषेक का अवसर भी प्रदान किया। यह स्वामी जी का विद्वानों के प्रति वात्सल्य ही तो है।

तिरुमलई का यह क्षेत्र अत्यन्त सुन्दर, पुरातत्त्व से समृद्ध, शांतिदायक एवं अतिशय युक्त है। सभी को इसका एक बार दर्शन अवष्य करना चाहिए। प्राचीन मूर्तियाँ एवं नवग्रह मन्दिर की भव्यता आपको मंत्रमुग्ध कर देगी। रत्नमयी प्रतिमायें मंदिर का आकर्षण बढ़ाती है। स्वामी जी के सहयोग से स्वर्णमयी महालक्ष्मी मंदिर जी के दर्शनों का अवसर मिला। यह मन्दिर अतिभव्य है।

2. श्रवणबेलगोल यात्रा: उत्तर भारत के साधर्मी बन्धुओं के मन में भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली की छवि ऐसी रची-बसी है उन्हें जब भी गोम्मटेश्वर के दर्शन का अवसर मिलता है वे फौरन तत्पर हो जाते है जिन्हें अब तक नहीं मिला है वे सदैव उनके दर्शन हेतु श्रवणबेलगोल जाने की भावना भाते हैं। हर जैन बन्धु जैसे सम्मेदशिखर जी जाने की भावना भाता है वैसे ही श्रवणबेलगोल गोम्मटेश्वर बाहुबली जी के दर्शन हेतु जाना चाहते हैं।

सराकोद्धारक राष्ट्रसंत समाधिस्थ आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज की स्मृतियों को अक्षुण्ण रखने हेतु उनके भक्तों विशेषतः दिल्ली एवं मेरठ मंडल (उ.प्र.) के भक्तों ने पूज्य आचार्य श्री के 2009 के श्रवणबेलगोल वर्षायोग की स्मृतियों को स्थायी बनाने हेतु श्रवणबेलगोल में आचार्य ज्ञानसागर निलय (यात्रियों के आवास हेतु) बनवाने का निश्चय किया। श्रवणबेलगोल के नूतन भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी से अनेक बार की चर्चाओं, भूमि चयन आदि के उपरान्त 21 नवम्बर 24 की तिथि शिलान्यास एवं भूमिपूजन के लिए तय की गई। इसकी घोषणा 20 अक्टूबर 2024 में परम्परा की गणिनी, आर्यिकारत्न श्री स्वस्तिभूषण माताजी के पावन सान्निध्य में स्वस्तिधाम-जहाजपुर (भीलवाड़ा) में की गई। गुरुवर ज्ञानसागर जी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने हेतु मैंने भी इस अवसर पर श्रवणबेलगोल जाने का निर्णय किया। 19.11.24 की प्रातः 6.10 की Indigo Flight से मैं सपत्नीक बैंगलोर गया। सुयोग से इसी Flight में श्री संतोष कुमार जैन (घड़ी)-सागर, पं. विनोदकुमार जैन-रजवांस एवं पं. सुरेश जैन 'मारौरा'-इन्दौर भी साथ थे। फलतः सामयिक चर्चाओं का सुअवसर भी मिला। 8.00 बजे बैंगलोर एअरपोर्ट पहुँचने के बाद जहाँ श्री संतोष जी अपने दल के साथ आचार्य श्री विशुद्धसागर जी के दर्शनों हेतु नांदणी से श्रवणबेलगोला के विहार मार्ग पर चले गये वहीं मैं सपत्नीक अपने मामाजी श्री प्रमोदकुमार जी जैन, व्हाइटफील्ड अपार्टमेन्ट, वैदेही हास्पिटल के पास जाकर ठहर गया। अपरान्ह में आर.वी. इंजीनियरिंग कालेज के गणित के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. एन. शिवकुमार से भारतीय गणित के विकास के बारे में सार्थक चर्चा की। प्रो. शिवकुमार जी ने आचार्य यतिवृषभ प्रणीत तिलोयपण्णत्ती के गणित पर अनुसंधान कार्य किया है। सायं डॉ. डी. तेजस्विनी आचार्य कुमुदेन्दु कृत सिरिभूवलय ग्रंथ पर चल रहे शोधकार्य पर चर्चा की। वे इस अनूठे अंकलिपि में लिखे ग्रंथ की डीकोडिंग एवं अन्तर साहित्य की प्रस्तुति हेतु सफल प्रयास प्रचार से दूर रहकर कर रही हैं। मैं कई वर्षों से उनके सम्पर्क में हूँ। उनके शोधकार्य की सफलता एवं निश्कर्षों को देखकर प्रसन्नता हुई क्योंकि यह दिगम्बरत्व की प्रभावना का अनूठा कार्य है। 20 नवम्बर की प्रातः ज्ञानोदय मन्दिर के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। ऐसा प्रतीत हुआ कि इस क्षेत्र में आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के भक्त पर्याप्त संख्या में है एवं मन्दिर प्रबन्धन में भी उनकी भूमिका है। दर्शनोपरान्त हम मैसूर की ओर प्रस्थान कर गये वहाँ मैसूर विश्वविद्यालय की गणित की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. पद्मावथम्मा का आतिथ्य ग्रहण किया। प्रो. पद्मावथम्मा को महावीराचार्य के गणितसार संग्रह के कन्नड़ अनुवाद का श्रेय प्राप्त है। उनसे चर्चाओं में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों का निर्णय हो सका। पश्चात

नवग्रह मन्दिर में उद्बोधन देते हुए

उन्हीं के साथ गोपाल मन्दिर एवं होसकेटे के भगवान बाहुबली के दर्शनों को गये। के.आर.एस. (कृष्णराज सागर) के डूब क्षेत्र में आने के कारण नये स्थान पर बनाये गये गोपाल मन्दिर की संरचना पुरातत्त्व की रक्षा एवं इस प्रकार की परिस्थितियों में बिम्बों की रक्षा एक का सुन्दर उदाहरण है। होसकेटे के भगवान बाहुबली की मूर्ति भी अत्यन्त प्राचीन होकर आकर्षक है। इन मूर्ति की कुछ वर्षों पूर्व ही प्राप्ति हुई है। क्षेत्र का युगल मुनि जी की प्रेरणा से अच्छा विकास हुआ है। इस क्षेत्र एवं उसके चतुर्दिक बैक वाटर की विशाल जलराशि देखकर मन प्रसन्न हुआ। वहाँ से वृन्दावन गार्डन-मैसूर के सौन्दर्य को देखकर हम भगवान बाहुबली के पादमूल में श्रवणबेलगोल पहुँचे जहाँ श्री विवेक जी (गाजियाबाद) ने सब व्यवस्थायें कर रखी थी।

रात्रि में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन (गाजियाबाद) तथा उत्तरांचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जी जैन, कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष श्री विनोद जी बाकलीवाल से तीर्थों के संचालन में आ रही समस्याओं पर चिन्तन हुआ। वस्तुतः यह बड़ा संक्रमण का काल है हमें प्राण प्रण से पूर्वजों से विरासत में प्राप्त तीर्थों की रक्षा करनी है।

प्रातः काल भारत का तीर्थ प्रेमी नेतृत्व ही इकट्ठा था। चेन्नई से श्रीमती सरिता जी, मुरैना से ब्र. अनीता जी, ब्र. मंजुला जी, टीकमगढ से ब्र. जयनिशान्त जी, मध्यांचल से श्री संतोष जी, पं. विनोद जी, पं. सुरेश मारौरा जी, प्रो. नलिन के. शास्त्री (दिल्ली), भाई विवेक जी, श्री आनन्द जी एवं मेरठ, गाजियाबाद से अनेक भक्तगण उपस्थित थे। सबकी एक ही भावना थी कि आचार्य ज्ञानसागर निलय की स्थापना के माध्यम से क्षेत्र के साथ जुड़ी आचार्य श्री की स्मृतियों को अक्षुण्ण रखा जाये। क्षेत्र पर यात्री सुविधा तो बढ़ेगी ही। शिलान्यास विधि में मुझे भी सम्मिलित कर पूज्य स्वामी जी ने पुण्यार्जन का अवसर दिया। प्रतिष्ठा विधि पं. जयनिशान्त जी प्रतिष्ठाचार्य ने सम्पन्न कराई। कार्यक्रम को क्षुल्लिका श्री अर्हत्मती माताजी (जहाजपुर) ने भी अपना सान्निध्य प्रदान किया। अपरान्ह में श्रवणबेलगोल से चलकर हम रात्रि में इन्दौर आ गये।

तमिलनाडु एवं कर्नाटक में दिगम्बरत्व का वैभव पग-पग पर फैला है। आईये हम सब इसको संरक्षित करने में तीर्थक्षेत्र कमेटी का हाथ बढ़ाये।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

मुनि श्री प्रमाणसागर जी और भावना योग

– संतोष जैन काला, गुवाहाटी

सारांश

पूज्य मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज जी द्वारा प्रचलित भावना योग एक महत्त्वपूर्ण साधना प्रक्रिया है जो आत्मा की शुद्धि और मानसिक शांति को बढ़ावा देने के लिए विकसित की गई है। यह जैन धर्म के सिद्धांतों पर आधारित है और इसके द्वारा व्यक्ति अपने भीतर सकारात्मक भावनाओं को जागृत कर सकता है, जो आत्म–संयम, शांति और संतुलन की ओर ले जाती हैं। भावना योग को जैन धर्म में मोक्षमार्ग के लिए अत्यंत सहायक माना जाता है, क्योंकि यह व्यक्ति को स्वयं के भीतर झांकने और आत्मा की वास्तविकता को समझने की प्रेरणा देता है।

1. भावना योग का उद्देश्य: भावना योग का मुख्य उद्देश्य है कि व्यक्ति अपने भीतर के नकारात्मक भावों जैसे क्रोध, अहंकार, लोभ और मोह का त्याग करें और उनमें सकारात्मक भावनाओं का विकास हो। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को आत्म–संयम, आत्मा की शुद्धि और अंतर्मन की शांति का अनुभव कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भावना योग का नियमित अभ्यास व्यक्ति को उसकी आत्मा के साथ एक गहरा संबंध स्थापित करने में सहायक होता है, जो उसे सच्चे मोक्ष मार्ग पर अग्रसर करता है। भावना योग से जीवन में संजीवनी जैसी ऊर्जा का संचार होता है। यह व्यक्ति को यह समझने में सहायक होता है कि आत्मा के अलावा कोई अन्य सहारा नहीं है और जीवन का मूल उद्देश्य आत्म–साक्षात्कार और आत्मा की शुद्धि है।

2. भावना योग के लाभ: मानसिक शांति–भावना योग का नियमित अभ्यास मानसिक तनाव को कम करता है और शांति का अनुभव कराता है।

आत्म–नियंत्रण –इससे व्यक्ति का आत्म–नियंत्रण बढ़ता है, जो उसे संसार की नकारात्मक चीजों से दूर रखता है।

सकारात्मकता–यह व्यक्ति के अंदर सकारात्मकता को बढ़ावा देता है और उसे दूसरों के प्रति करुणामय दृष्टिकोण अपनाने में मदद करता है।

धैर्य और सहनशीलता–भावना योग व्यक्ति को धैर्यवान और सहनशील बनाता है, जिससे वह विपरीत परिस्थितियों में भी अपने आपको संतुलित रख सकता है।

रोगों से छुटकारा –भावना योग का नियमित अभ्यास इंसान को असाध्य रोगों से भी छुटकारा पाने में मदद करता हैं।

मोक्ष का मार्ग –भावना योग का अभ्यास व्यक्ति को मोक्ष मार्ग पर अग्रसर करता है, जिससे उसकी आत्मा कर्म बंधन से मुक्त होती है।

3. भावना योग का समकालीन जीवन में महत्त्व: आधुनिक जीवन में भावना योग का महत्त्व और भी अधिक बढ़ गया है। आजकल लोग तेजी से भागते जीवन, तनाव, चिंता और प्रतिस्पर्धा से घिरे हुए है। भावना योग ऐसे लोगों को मानसिक शांति और स्थिरता प्रदान करने में सक्षम है। जब व्यक्ति अपनी आत्मा को समझता है और उसमें स्थायी शांति का अनुभव करता है तो वह बाहरी परिस्थितियों से प्रभावित नहीं होता। भावना योग उन्हें उन मूल्यों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है, जो व्यक्ति के जीवन को संतुलित और सार्थक बनाते है।

वर्तमान में लोग जैन धर्म के मूल सिद्धांतों और आध्यात्मिक साधनाओं को भुलाते जा रहे है और भावना योग इन्हीं सिद्धांतों को पुन: याद दिलाने का एक उत्कृष्ट साधन है। यह व्यक्ति को उसकी वास्तविकता, उसके उद्देश्य और उसकी आत्मा की दिशा में उन्मुख करता है।

उदाहरण: मान लीजिए किसी व्यक्ति को अत्यधिक क्रोध आता है। क्रोध की स्थिति में व्यक्ति के मन और शरीर दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है–हृदय गति तेज हो जाती है, मानसिक संतुलन खो जाता है और उसे शांति का अनुभव नहीं होता। अगर वह व्यक्ति भावना योग का अभ्यास करता है तो वह अपने मन में क्षमा, करुणा और शांति का संचार कर सकता है। धीरे–धीरे क्रोध के नकारात्मक प्रभाव कम हो जाते हैं और वह व्यक्ति अपने क्रोध को नियंत्रण में लाकर शांत और

सकारात्मक महसूस करता है।

4. भावना योग की प्रक्रिया: भावना योग का अभ्यास करने के लिए व्यक्ति को एक शांत और एकांत वातावरण का चयन करना चाहिए। इसे मुनि मार्गदर्शन में भी किया जा सकता है। भावना योग का अभ्यास ध्यान केंद्रित करने और विभिन्न भावनाओं का चिंतन करने पर आधारित होता है। इसके माध्यम से व्यक्ति उन भावनाओं को गहराई से अनुभव करता है और उनके प्रभाव को अपने जीवन में शामिल करने का प्रयास करता है। भावना योग के दौरान व्यक्ति को ध्यान केंद्रित कर अपने अंदर की सकारात्मक भावनाओं को जागृत करना होता है। इसे करने के लिए निम्नलिखित भावनाओं का अभ्यास किया जाता है:

अनित्य भावना—यह भावना हमें इस तथ्य को स्वीकार करने में सहायता करती है कि सब कुछ नश्वर है और कोई भी चीज स्थायी नहीं है। यह व्यक्ति को सांसारिक चीजों के प्रति मोह कम करने और जीवन की वास्तविकता को समझने की प्रेरणा देती है।

अशरण भावना—इस भावना का अभ्यास व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि आत्मा के अलावा कोई और सहारा नहीं है। इसके माध्यम से व्यक्ति को समझ में आता है कि जीवन में आत्मा ही एकमात्र शाश्वत सहारा है।

निर्जरा भावना—यह भावना हमें पुराने कर्मों का क्षय करने और नए कर्म बंधन को रोकने का मार्ग दिखाती है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी आत्मा को शुद्ध और निर्मल बनाने का प्रयास करता है।

शुद्ध आत्मा की भावना—यह भावना हमें अपने भीतर शुद्ध आत्मा का अनुभव कराती है जिससे व्यक्ति को सच्ची शांति और संतुलन का अनुभव होता है।

5. भावना योग और स्वास्थ्य लाभ: भावना योग की एक प्रमुख विशेषता है कि यह शरीर और मन के गहरे स्तर पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। जैन धर्म के दृष्टिकोण से, जब व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं को शुद्ध करता है, तो उसकी आत्मा के साथ—साथ शरीर भी शुद्ध और स्वस्थ बनता है। यही कारण है कि भावना योग के अभ्यास से कई असाध्य बीमारियों के लक्षणों में सुधार देखने को मिलता है।

भावना योग कैसे कार्य करता है?—भावना योग में मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक शुद्धि पर ध्यान दिया जाता है। इस योग का अभ्यास करने वाले व्यक्ति उन भावनाओं पर ध्यान केंद्रित कर गहन आत्म—विश्लेषण करते है। जब व्यक्ति नकारात्मक विचारों और भावनाओं से मुक्ति पाता है तो उसकी ऊर्जा का संचार सही दिशा में होता है, जिससे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और बीमारियों का नाश होता है।

थर्ड स्टेज कैंसर और लाइलाज बीमारियों में भावना योग के चमत्कारी प्रभाव: प्रमाण सागर महाराज जी के कई अनुयायियों ने अनुभव किया है कि थर्ड स्टेज कैंसर और अन्य लाइलाज बीमारियों में भी भावना योग से आश्चर्यजनक सुधार हुआ है। इसके पीछे कई कारण बताए जाते हैं:

मनोवैज्ञानिक प्रभाव—भावना योग से व्यक्ति के मनोविज्ञान पर गहरा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति नकारात्मकता और डर से मुक्त होता है, जो उसके शरीर की रिकवरी प्रक्रिया को तेज करता है। कैंसर जैसी गंभीर बीमारी में सकारात्मक मानसिकता और आत्म—विश्वास अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं, जो कि भावना योग के मध्यम से प्राप्त होते है।

तनाव का नाश—भावना योग करने से व्यक्ति का तनाव कम होता है, जिससे शारीरिक और मानसिक रूप से आराम महसूस होता है। कैंसर जैसे रोगों में तनाव और चिंता के कारण बीमारी बढ़ने की संभावना रहती है। भावना योग के माध्यम से व्यक्ति का मानसिक संतुलन बना रहता है, जो रोग के प्रभाव को कम कर सकता है।

शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता—भावना योग से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जिससे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इस प्रकार, शरीर कैंसर और अन्य लाइलाज बीमारियों से लड़ने में अधिक सक्षम बनता है।

आत्मिक शक्ति का विकास—भावना योग व्यक्ति को अपनी आत्मा के करीब लाता है, जिससे आत्मबल बढ़ता है। जब व्यक्ति को आत्मिक शांति और आंतरिक शक्ति मिलती है तो उसका शरीर भी धीरे—धीरे मजबूत होता है। आत्मा की यह शक्ति कई गंभीर बीमारियों को हराने में सहायक होती है।

उदाहरण और वास्तविक अनुभव: कई मरीजों ने भावना योग का अभ्यास करके अपनी स्थिति में सुधार की बातें साझा की है। कई कैंसर मरीजों ने थर्ड स्टेज पर पहुंचने के बाद भी भावना योग के नियमित अभ्यास से शारीरिक और मानसिक सुधार पाया। वे अपने अनुभव में बताते हैं कि कैसे भावना योग ने उन्हें जीवन में नई उम्मीद और ऊर्जा प्रदान की और कैसे उनके स्वास्थ्य में चमत्कारिक रूप से सुधार हुआ।

निर्धारित समय—प्रतिदिन ३०—४५ मिनट।

कौन कर सकता है—हर वर्ग का व्यक्ति, जो अपने जीवन में बदलाव एवं सकारात्मकता का अनुभव लाना चाहता है।

कब करें—प्रात: काल का समय ध्यान एवं आत्मसाधना के लिए सबसे उपयुक्त होता है, प्रात: न हो सके तो सायंकाल अपनी जीवन शैली के अनुकूल जब समय मिले, भावना योग कर सकते है।

6. वैज्ञानिक दृष्टिकोण: हालांकि भावना योग एक आध्यात्मिक अभ्यास है, इसके कुछ पहलुओं को आधुनिक चिकित्सा भी स्वीकार करने लगी है। चिकित्सकों का मानना है कि भावना योग से रोगियों में मानसिक और भावनात्मक बदलाव आते है जिससे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और कई मामलों में कैंसर जैसी बीमारियों पर नियंत्रण में सहायता मिलती है। तन को स्वस्थ, मन को मस्त और आत्मा को पवित्र बनाने का अभिनव प्रयोग है—'भावना योग'। 'यदु भावयते तदु भवित' (हम जैसी भावना भाते है, वैसा होता है) की प्राचीन उक्ति पर आधारित इस योग को वर्तमान में लॉ ऑफ अट्रैक्शन के रूप में जाना जाता है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार हम जैसा सोचते है, वैसे संस्कार हमारे

अवचेतन मन पर पड़ जाते है। वे ही संस्कार प्रकट होकर हमारे भावी जीवन को नियंत्रित और निर्धारित करते है। कहा जाता है—जीवनहीजे ठमबवउम जेपदहे अर्थात् विचार साकार होते है। भावना योग का यही आधार है। इसके माध्यम से हम अपनी आत्मा में छिपी असीमित शक्तियों को प्रकट कर सकते हैं। अर्थात् 'मैं शुद्ध आत्मा हूँ' इसकी बार—बार भावना भाने से अपनी शुद्ध आत्मा को प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक मनोविज्ञान के व्याख्याता इसी आधार पर लॉ ऑफ अट्रैक्शन के सिद्धांत को प्रचारित कर रहे हैं।

आधुनिक प्रयोगों के आधार पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि भावनाओं के कारण हमारी अन्त: स्त्रावी ग्रंथियों पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। इसके आधार पर अनेक गंभीर बीमारियों की चिकित्सा भी की जा रही है। यदि हम नियमित भावना योग करें तो इसका लाभ उठाया जा सकता है।,

इसे न्यूरो साइकोइम्यूनोलॉजी के रूप में भी जाना जाता है। इसी सिद्धांत पर भावना योग आधारित है। यह वही प्राचीन वैज्ञानिक साधना है जिसे हजारों वर्षों से अपनाकर जैन मुनि अपना कल्याण करते रहे हैं। उसी की आधुनिक व्याख्या करके मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज ने इसे जनोपयोगी बनाया है।

भावना योग Guided Meditation के प्रारूप पर आधारित, स्तुति, प्रार्थना, कायोत्सर्ग और सामायिक का एक अनूठा संगम है। इसके चार मुख्य स्तम्भ हैं—

१. प्रार्थना (Inner Nourishment)
२. प्रतिक्रमण (Inner Cleaning)
३. प्रत्याख्यान (Inner Resolution)
४. सामायिक (Inner Reflection)

इसमें सबसे पहले भगवान के प्रति आभार (Gratitude) व्यक्त करके कुछ अच्छी प्रार्थना करते है—अपने आपको सकारात्मक, शांत और सक्षम बनाने की। इसके बाद हम अपने अतीत के दोषों को झांक करके उन्हें साफ करने की कोशिश करते हैं, अपनी निद्रा—गहरी करते हुए मन को साफ और स्वच्छ बनाना, फिर भावी जीवन को, आज के दिन को उत्सव की तरह कैसे जियें इस संकल्प को दोहराते हुए प्रत्याख्यान करते हैं। इसके श्रद्धापूर्वक और नियमित प्रयोग से हम अपनी आत्मा का निर्मलीकरण करके अपनी चेतना की विशुद्धि बढ़ाते हुए अपनी जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर सकते हैं। मुनि प्रमाण सागर महाराज के द्वारा प्रचलित "भावना योग" को रामबाण औषधि कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को संतुलित करने का एक गहरा साधन है। भावना योग के अभ्यास से व्यक्ति अपनी नकारात्मक भावनाओं और विचारों पर नियंत्रण पर सकता है, जो जीवन में मानसिक और शारीरिक समस्याओं के मूल कारण होते हैं। इसके अभ्यास से मन शांत होता है, ध्यान बढ़ता है और आत्मिक बल की प्राप्ति होती है।

7. प्रमाण सागर महाराज जी का योगदान: मुनि श्री प्रमाणसागर जी ने भावना योग के माध्यम से जैन धर्म की गहरी और प्राचीन साधना पद्धतियों को आधुनिक समाज तक पहुंचाने का अद्वितीय कार्य किया है। उन्होंने भावना योग के सिद्धांतों को सरल और सहज भाषा में समझाया ताकि सभी लोग इसे अपने जीवन में आसानी से अपना सकें। उनके उपदेशों और मार्गदर्शन से न केवल जैन अनुयायी, बल्कि अन्य धर्मों के लोग भी लाभान्वित हुए है। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर शिविरों, प्रवचनों और कार्यशालाओं के माध्यम से भावना योग का प्रचार—प्रसार किया है जिससे समाज में आध्यात्मिकता और आत्मिक शांति का संचार हुआ है।

प्रमाण सागर जी का मानना है कि भावना योग आत्म—साक्षात्कार का सबसे सरल और प्रभावी साधन है। उन्होंने बताया कि जब व्यक्ति अपने भीतर की शुद्ध आत्मा का अनुभव करता है उसे सच्ची शांति और संतोष की प्राप्ति होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति सांसारिक विकारों से दूर होकर आत्म—शुद्धि की ओर बढ़ता है जो मोक्ष मार्ग की ओर ले जाता है।

निष्कर्ष: मुनिश्री प्रमाण सागर जी द्वारा प्रचारित भावना योग एक ऐसा आध्यात्मिक साधन है जो व्यक्ति को मानसिक, आत्मिक और शारीरिक लाभ प्रदान करता है। यह जीवन को संतुलित और सार्थक बनाने के लिए एक प्रभावी माध्यम है, जो व्यक्ति को उसकी आत्मा के वास्तविक स्वरूप से जोड़ता है। भावना योग के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की शुद्ध आत्मा को अनुभव कर सकता है, जो उसे सच्चे शांति और संतोष की ओर ले जाता है।

इस योग का महत्त्व आज के समय में और भी अधिक हो गया है, जब लोग तनाव और प्रतिस्पर्धा से ग्रस्त है। भावना योग का अभ्यास न केवल व्यक्तिगत शांति और संतुलन प्रदान करता है, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाने का सामर्थ्य रखता है। मुनि श्री प्रमाण सागर जी के प्रयासों से भावना योग का प्रसार हुआ है, और इससे अनेक लोगों को अपनी आत्मा को समझने और उसे शुद्ध करने की प्रेरणा मिली है। भावना योग के माध्यम से व्यक्ति को यह समझने में सहायता मिलती है कि सच्ची शांति और संतोष भौतिक चीजों में नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और आत्मा के साथ तादात्म्य में है। यह योग हमें सिखाता है कि जीवन का उद्देश्य न केवल भौतिक उपलब्धियों में है, बल्कि आत्म—साक्षात्कार और आत्मिक उन्नति में भी है। भावना योग का नियमित अभ्यास हमें न केवल आत्मा की ओर अग्रसर करता है, बल्कि हमें एक अच्छा और संवेदनशील इंसान भी बनाता है। यह हमें हमारे कर्मों के प्रभाव को समझने और उन्हें सुधारने का अवसर देता है। मुनि श्री प्रमाण सागर जी का यह योगदान हमेशा स्मरणीय रहेगा और आने वाले समय में भी यह साधना पद्धति हमें जीवन में शांति, संतुलन और आत्मिक संतोष प्रदान करती रहेगी।

जैन गजट (लखनऊ) से संपादित रूप में साभार

सिद्धक्षेत्र गिरनार की गूंज संसद तक

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

प्र

तीर्थ हमारी आस्था, श्रद्धा के केन्द्र होने के साथ-साथ ही हमारी ऐतिहासिक अमूल्य धरोहर भी हैं। इनका संरक्षण, संवर्द्धन हम सभी का दायित्व और कर्त्तव्य है।

सिद्धक्षेत्र गिरनार जी हमारा प्रमुख तीर्थ क्षेत्र है लेकिन वहाँ के जैसे हालात हैं वह किसी से छिपे नहीं है। असामाजिक तत्व जिस तरह से हमारे तीर्थ यात्रियों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं वह भी किसी से छिपा नहीं है, वहाँ पर जिस तरह से अवैध कब्जा, अतिक्रमण हो रहा है उससे प्रत्येक जैनी की आत्मा आहत है। सारे प्राचीन इतिहास चीख-चीख कर जैन सिद्धक्षेत्र होने के पुख्ता प्रमाण दे रहे हैं फिर भी कोई सुनने वाला नहीं है। गिरनार पर्वत पर 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान से संबंधित पुरातात्विक प्रमाण जैसे प्रमाण अन्य किसी भी धर्म के भारत के पुरातत्व विभाग को प्राप्त नहीं हुए हैं।

विगत दिनों सिद्धक्षेत्र गिरनार जी का मुद्दा राजनीतिक गलियारों में खूब छाया रहा। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया में भी इसकी खबरें खूब आयीं। शुरुआत समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी के X पर ट्वीट से हुई जिसमें उन्होंने लिखा कि-' देश भर के जैन समाज में इस बात को लेकर बेहद आक्रोश है कि उनके पूजा स्थलों और तीर्थों को कुछ बहुसंख्यक भुत्ववादी लोग लगातार अपने क़ब्ज़े में लेते जा रहे हैं। ऐसे कुप्रयासों से शांतिप्रिय, अहिंसक अल्पसंख्यक जैन समाज में चतुर्दिक असंतोष जन्म ले रहा है। ये भारत की विविधता के विरुद्ध एक बहुत बड़ा षड्यंत्र है जिसमें गुजरात के गिरनार से लेकर शिखरजी तक देश भर के कई अन्य जैन तीर्थस्थलों पर भी कुछ लोग कुदृष्टि लगाये बैठे हैं।जैन समाज के तीर्थ स्थलों व मंदिरों को बचाने के लिए सबको एकजुट होना चाहिए। हमारी माँग है कि हर अल्पसंख्यक समाज को अपनी परंपरागत पूजा, उपासना या इबादत का संविधान सम्मत हक़-अधिकार मिलना चाहिए।"

इस पर केंद्रीय मंत्री किरन रिजीजू ने भी X पर ट्वीट कर अखिलेश यादव जी को जबाब दिया। इन ट्वीट के बाद यह मुद्दा सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया। इसके बाद दो दिसम्बर 2024 को सुविख्यात सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी मुद्दे पर सहारनपुर से सांसद माननीय इमरान मसूद ने लोक महत्व के विषय पर संज्ञान लेने के लिए लोकसभा अध्यक्ष को नोटिस दिया और शून्यकाल के दौरान अपनी बात रखने की इजाजत मांगी वह नोटिस स्वीकार भी हो गया , जानकारी के मुताबिक विपक्ष के नेता माननीय राहुल गांधी की भी इस नोटिस पर सहमति थी। लेकिन 2 दिसम्बर को लोकसभा

स्थगित हो गयी। श्री विपिन जैन सहारनपुर के मुताबिक- नोटिस स्वीकृत होने के बाद अगर संसद किसी वजह से स्थगित भी हो जाती है तो भी स्वीकृत नोटिस को सदन की कार्यवाही का हिस्सा माना जाता है। सांसद इमरान मसूद का श्री गिरनार जी सिद्ध क्षेत्र को लेकर दिया गया नोटिस अब सदन की कार्रवाई का हिस्सा है।

सांसद इमरान मसूद जी ने शून्यकाल के दौरान मामला उठाने के लिए जो सूचना लोकसभा को दी है, उसमें लिखा है कि - आज मैं सदन का ध्यान एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दे की ओर आकर्षित करना चाहता हूं, यह न केवल धार्मिक आस्था से जुड़ा है,बल्कि अल्पसंख्यक जैन समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर व अधिकारों की सुरक्षा का प्रश्न है। माननीय महोदय, गुजरात के जूनागढ़ जिले में स्थित पवित्र गिरनार पर्वत भारत वर्ष के प्राचीनतम धर्म,जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की मोक्षस्थली है,भगवान नेमिनाथ की निर्वाण भूमि,जिसे सदियों से जैन धर्मावलंबी श्रद्धा और आस्था से पूजते आए हैं,आज वहां जबरन कब्जा किया जा रहा है,अकबरनामा जैसे प्रतिष्ठित ऐतिहासिक ग्रंथ, ब्रिटिश कालीन रिपोर्ट्स,ASI रिपोर्ट्स और अन्य ऐतिहासिक दस्तावेज यह साबित करते हैं कि गिरनार पर्वत जैन धर्म का बेहद प्राचीन तीर्थस्थल है, इस विषय में गुजरात हाई कोर्ट ने भी स्पष्ट निर्देश दिया है कि जैन धर्मावलंबी वहां शांति से पूजा-अर्चना कर सकते हैं,1991 में पारित उपासना स्थल कानून स्पष्ट रूप से कहता है कि 15 अगस्त 1947 के बाद किसी भी धार्मिक स्थल की स्थिति में बदलाव नहीं किया जा सकता। लेकिन कानून का उल्लंघन करते हुए कोरोना काल में चुपचाप वहां पर अन्य धर्म की मूर्ति स्थापित करा दी गयी, गिरनार में जैन तीर्थस्थल को अकारण विवादों में घसीटा जा रहा है।

सभापति महोदय, जैन समुदाय,जो देश का एक शांतिप्रिय और अल्पसंख्यक वर्ग है, उनके साथ इस प्रकार का अन्याय हमारी लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष व्यवस्थाओं पर प्रश्न चिह्न लगाता है। स्थानीय जूनागढ़ प्रशासन और पुलिस की निष्क्रियता के कारण ही ऐसे तत्व बढ़ावा पा रहे हैं।

सभापति महोदय, मैं इस सदन के माध्यम से मांग करता हूं कि अल्पसंख्यक जैन समाज के पवित्र तीर्थ स्थलों गिरनार जी,शिखरजी, पालिताना जी, और अन्य जैन तीर्थस्थलों की पवित्रता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जैन तीर्थ स्थल संरक्षण बोर्ड बनाया जाये। 1991 के उपासना स्थल कानून का सख्ती से पालन किया जाए। धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों पर कब्जा करने वाले असामाजिक तत्वों और इसमें शामिल अवांछनीय तत्वों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये।

सभापति महोदय, भारत विविधताओं में एकता का देश है,यहां हर समुदाय, धर्म का सम्मान होना चाहिए, जैन समाज, जो विश्व मे अहिंसा और शांति का प्रतीक है, को न्याय दिलाना और उनकी आस्थाओं की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है,यह सिर्फ जैन समाज की नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय विरासत और धर्मनिरपेक्षता की रक्षा का प्रश्न है।

गिरनार मुद्दा राजनैतिक गलियारों में चर्चा का विषय रहा। जैन समाज का कर्त्तव्य बनता है कि जैसे भी हो अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विरासत को सहेजने, सम्हालने, बचाने के जो भी अवसर मिलें उनका लाभ लेना चाहिए। क्योंकि हमारे प्राचीन तीर्थों से ही हमारी पहचान है।

गिरनार से प्राप्त और जूनागढ़ संग्रहालय (गुजरात) में संगृहीत 12-13वी सदी की प्राचीन मूर्ति के ऊपरी भाग में 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान व नीचे श्रद्धालु दानी दंपत्ति और हाथी पगला, गिरनार व सोमनाथ से प्राप्त प्राचीन शिलालेख गिरनार पर प्राचीन जैन तीर्थ होने के पुरातात्विक अकाट्य प्रमाण हैं।

नेमिनाथ जी की मोक्ष स्थली पांचवीं टोंक के लिए समझौता नहीं, निष्पक्ष न्याय चाहिए

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

जैन धर्मायतनों पर कब्जा और अवैध अधिकार:

इतिहास प्रमाणित सर्व सत्य यह है कि दया, अहिंसा और करूणा के पालक जैन धर्मावलंबियों ने कभी भी किसी भी धर्म के धर्मस्थलों पर न कब्जा जमाया है और न उनपर अधिकार किया और न उनकी अवमानना ही की है। जैन धर्मावलंबियों ने सदा ही सभी समाज और धर्मों का आदर और सम्मान किया है। इसके विपरीत इतिहास गवाह है कि जैनधर्म के धर्मस्थलों और तीर्थक्षेत्रों पर संख्या बल के दम पर कब्जा,अधिकार और अतिक्रमण किया जाता रहा है। उसके धर्मायतनों को खण्डित और क्षतिग्रस्त तक किया गया है।

अत्यल्पसंख्यक के तीर्थों पर बहुसंख्यकों द्वारा कब्जा:

समझ में नहीं आता कि संविधान सम्मत लोकतांत्रिक राष्ट्र में अत्यल्पसंख्यक दिगंबर जैनियों के धर्मायतनों पर संख्याबल के आधार कब्जा, अधिकार और अतिक्रमण करने की अनेक घटनाएं बहुसंख्यक समाज द्वारा की जा रही है। धर्मसापेक्ष लोकतांत्रिक देश में जैन समाज की धार्मिक आस्था और निष्ठा पर आघात किया जाना विचारणीय और चिंतनीय है। यह लेख गुजरात राज्य के जूनागढ़ स्थित दिगंबर जैन धर्म का सिद्धतीर्थ के बारे में है। गिरनार पर्वत की पुरातत्व संरक्षित दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं टोंक प्राचीनकाल से ही दिगंबर जैनधर्मियों की परम्परा से आस्था, वंदना, उपासना स्थली रही है। राजनैतिक प्रश्रय से उन पर कब्जा करके अधिकार जमाने की चेष्टा लोकतांत्रिक और संवैधानिक भारत राष्ट्र के माथे पर अमिट कलंक है। ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से जैनधर्म स्वतंत्र धर्म है। हिंदू और सनातन से भी प्राचीन है। जैन, अर्हत और श्रमणों द्वारा प्रवर्तित धर्म है।

किसी धर्म में नहीं है नेमिनाथ जी जैसा मोक्षगमन:

जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकर भगवंतों के मोक्ष गमन की जानकारी कोरी कपोल कल्पना नहीं है। सभी तीर्थंकर भगवंतों की भांति भगवान नेमिनाथ जी का मोक्षगमन जानना प्रासंगिक है। गिरनार पहाड़ की पांचवी टोंक से भगवान नेमिनाथ के मोक्ष गमन जैसी जानकारी किसी अन्य धर्म में नहीं है।

जानिये वह किस प्रकार से मोक्ष पधारें:

अपनी अंतिम देशना के उपरांत विहार करते-करते नेमिनाथ जी गिरनार पर्वत के उतुंग शिखर पर पहुंच गये। दिव्य परमोदारिक दैदिप्यमान स्वर्णमय काया के साथ कायोत्सर्ग मुद्रा में अवस्थित हो गये। उनकी उतुंग दिव्य काया गिरनार पर्वत के शिखर पर उगते हुए सूर्य की तरह प्रतिभाषित हो रही थी। काया से निकलती प्रकाश की किरणें पूरे गिरनार पर्वत को दैदिप्यमान कर रही थी। उतुंग शिखर के चारों ओर उनके मध्य दैदिप्यमान कांति के धारक भगवान नेमिनाथ कायोत्सर्ग में लीन थे। लगातार योग-निरोध की प्रक्रिया से कायोत्सर्ग में इसी भांति लीन, अपने जीवन के अंतिम अंत:मुर्हूत शेष रहने पर

वे काया से उत्सर्ग हो रहे थे। अपने शरीर के सभी स्थूल स्पंदनों को निरुद्ध कर लिया और उसके साथ-साथ स्थूल वाचिक स्पंदनों को निरुद्ध कर स्थूल मानसिक स्पंदनों का भी निरोध कर लिया। स्थूल श्वांस-श्वास का भी उन्होंने निरोध कर लिया। सूक्ष्म श्वांस-श्वास को रखते हुए सुक्ष्म वाचिक और मानसिक स्पंदनों का भी निरोध कर लिया। सूक्ष्म श्वांस-श्वांस का निरोध कर सूक्ष्म कायिक स्पंदनों का भी निरोध कर लिया। पूर्णत: स्पंदनातीत

अयोग अवस्था को प्राप्त कर लिया और वे हो गये अयोग केवली। उन्होने अपनी आत्मा में लगी कर्म की 72 प्रकृतियों का एक साथ विनाश किया। अंत में शेष बची 13 कर्म प्रकृतियों का क्षय कर सिद्ध, बुद्ध, निरंजन अवस्था को प्राप्त कर लिया। वे काया से, कर्म से मुक्त होकर सिद्धालय में विराजमान हो गये। उनकी यह दिव्य काया, लोक में विलीन हो गयी। शेष बचा केवल नख और केश। प्रभु मुक्ति को पधार गये। स्वर्ग के देवों का आसन कांप रहा था। भुवनवासियों के यहां शंख की ध्वनि, यंतरों के यहां नगाड़ों की ध्वनि, ज्योतिषियों के यहां दुदुभी का नॉद और कल्पवासी देवों के यहां घण्टों का नॉद स्वत: हो रहा था। चारों निकायों के देवों ने भगवान के इस मोक्ष गमन को जानकर अपने-अपने स्थानों से प्रयाण कर दिया।पूरा गिरनार पर्वत देव मण्डली के आगमन से भरा गयी। चतुर निकाय के देव गिरनार पर्वत की चोटीं पर आकर एकत्रित हो गये। चारों तरफ देवगण थे। सौधर्म इन्द्र ने भगवान के निर्वाण कल्याणक की क्रिया करने के लिये, अग्निकुमार देवों और इन्द्रों को प्रेषित किया। अग्निकुमार भगवान की अंतिम संस्कार की क्रिया सम्पन्न कर रहे थे। सौधर्म इन्द्र ने वज्र के माध्यम से वहां चरण-चिन्ह अंकित कर दिया। भगवान के नख- केश के अंतिम संस्कार के उपरांत वहां बची राख को सभी ने अपने माथे पर लगा लिया।भगवान आपने अपने आवागमन (जीवन-मरण) को सदा-सदा के लिये समाप्त कर दिया। अपने आवागमन का अंत कर दिया। आप अनंत में जा विराजे। प्रभु हममें भी ऐसी योग्यता और पात्रता विकसित

हो। वह रत्नत्रय को धारकर संसार के आवागमन से सदा-सदा को मुक्त हो गये। इस परमोदारिक काया की दिव्य और पवित्र रज को सभी ने अपने मस्तक पर लगा लिया।

एडवोकेट विष्णुकुमार जैन और जैनधर्म:

दिगम्बर जैनधर्म के तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जी की मोक्ष स्थली गिरनार पहाड़ की पांचवीं टोंक से सबंधित विवाद समाधान के लिये एडवोकेट विष्णुशंकर जैन का एक राष्ट्रीय चैनल पर दिया गया यह कथन कि पांचवीं टोंक पर दिगंबर जैनियों को दर्शन की सुविधा प्रदान करने के लिए चर्चा चल रही है। विरोध चर्चा करने का नहीं है। विवाद के समाधान का प्रयास निश्चित् ही सराहनीय है। किंतु श्री विष्णुकुमार जैन को सुझाव है। उन्हें सबसे पहले अहमदाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति जयंत पटेल द्वारा 17 फरवरी 2005 को प्रदत्त स्थगन आदेश का अध्ययन करना चाहिए। आदेश में दिगंबर जैन समाज के यात्रियों को पांचवीं टोंक पर अपनी आम्नाय/परंपरा अनुसार धार्मिक क्रिया करने का उल्लेख है। यह उल्लेख भी है कि अन्य सभी यात्री भी निर्बाध के रूप से इस टोंक में दर्शन-पूजन-वंदन कर सकेंगे। किंतु पांचवीं टोंक पर कब्जा जमाकर बैठे रहने वाले महंत के प्रतिनिधिगणों ने उच्च न्यायालय के स्थगन आदेश के पालन में तब से अब तक हर संभव बाधाएं उपस्थित की हैं। धर्म पालन के संवैधानिक मौलिक अधिकारों का जानबूझकर उल्लंघन किया गया है। स्थगन आदेश की अवहेलना, अवमानना की गई है। दिगंबर जैन यात्रियों को क्रूरता, निर्दयता, अमानवीयता, अधार्मिक भावना के साथ सैकड़ों बार प्रताड़ित किया जाता रहा है। मंगलवार 01 जनवरी 2013 की शाम को पांचवीं टोंक पर वंदना निमित्त गये, अहिंसा-दया और करूणा के पालक मुनि श्री प्रबलसागर जी के पेट पर तथाकथित महंत (मुक्तानंद) द्वारा चाकु से पांच बार प्रहार किया गया। उनकी चिकित्सा जूनागढ़ के चिकित्सालय में हई थी। उचित और व्यावहारिक तो यह होगा कि एडवोकेट विष्णुशंकर जैन गहराई से गिरनार पर्वत की पांचवीं और दूसरी, तीसरी, चौथी टोंक के सन्दर्भ में दिगंबर जैनधर्म की प्राचीनता, इतिहास और पुरातत्व की प्रमाणिक जानकारी का अध्ययन करें। तब उनको स्पष्ट हो जायगा कि गिरनार पहाड़ पर महंतों का आधार न प्राचीन था और न ही प्रमाणिक। उन्हें खोज-बिन करना चाहिए कि दिगंबर जैनधर्म की पांचवीं टोंक के संबंध में जूनागढ़ के नवाब के हिंदू दीवान ने रेकार्ड में चालाकी से दत्तात्रेय नाम परिवर्तन क्यों किया ? धार्मिक स्थान तो सनातन अर्थात् स्थायी होते हैं। किसी भी धर्मतीर्थ का नाम परिवर्तन किया ही नहीं जा सकता है। गिरनार पर्वत की दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं टोंकों पर दत्तात्रेय के आगमन का इतिहास में कोई प्रमाणिक आधार है नही। एडवोकेट विष्णुशंकर को विवाद को न्याय,सत्य और संवैधानिक कसौटी पर तोलना चाहिए। उसकी तह में जाना चाहिए। ऐसा लगता है एडवोकेट विष्णुशंकर नाम से जैन हैं किंतु उन्हें जैनधर्म और उसके तीर्थंकरों के इतिहास का संभवत: ज्ञान ही है ही नहीं। अगर विष्णुशंकर जैन एडवोकेट तथ्यों का गहराई से अध्ययन करेंगे,तब उनकी अब तक की धारणा और अभीमत निश्चित् ही बदल जायगा। उनसे अपेक्षा है कि वह निष्पक्षता, बिना पक्षपात और सत्यमेव जयते का साथ दें और सहयोग प्रदान करें। पांचवीं टोंक के संबंध में समझौता चर्चा को लेकर जैन अनुयायियों को मात्र दर्शन करने की सुविधा की बात कहने से लगता हे कि उनकी धार्मिक, ऐतिहासिक और पुरातात्विक जानकारी कमजोर है ?

सौहार्दपूर्ण स्थाई समाधान के लिए एडवोकेट विष्णुशंकर जैन को सुझाव:

वास्तव में अगर एडवोकेट विष्णुशंकर जैन दिगंबर जैनतीर्थ गिरनार पहाड़ पर स्थित दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं टोंकों का सौहार्दपूर्ण स्थाई समाधान निकालना चाहते हैं, तो उन्हें महंतगणों को समझाना और गले उतारना चाहिए कि गिरनार पहाड़ पर पिछले कुछ वर्षों में निर्मित कमलकुण्ड क्षेत्र पर वे अपनी सम्पूर्ण धार्मिक गतिविधियां करते रहे हैं और भविष्य में भी इसी कमल कुण्ड पर अपनी सम्पूर्ण गतिविधियां करते रहें। उनके द्वारा निर्मित इसी कमलकुण्ड में महंतगण अपने परम आराध्य दत्तात्रेय को ससम्मान विधि-विधान के साथ विराजमान कर दें। कमलकुण्ड स्थल पर ही महंत अपनी सभी धार्मिक गतिविधियां संचालित करें। उन्नको सुझाव है कि वह दिगम्बर जैनधर्म की और अनुयायियों की दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं टोंकों पर, दिगंबर जैनधर्म के अनुयायियों का पूर्ण अधिकार स्वीकार कर लें। कमल कुण्ड के अतिरिक्त गिरनार पहाड़ पर महंतगण अपने अधिकार की भावना का त्याग कर दें। धार्मिक और मानवीय दृष्टि से दिगंबर जैनधर्म के बाविस वें तीर्थंकर यदुवंशी, भगवान कृष्ण के चचेरे भाई भगवान नेमिनाथ जी की मोक्षस्थली, निर्वाण स्थली गिरनार पहाड़ की पांचवीं टोंक की प्राचीनता स्वयं सिद्ध है। पुरातत्व संरक्षित है।

सनातन से तात्पर्य:

सनातन का अर्थ शाश्वत है। धर्म सनातन है। जो सनातन नहीं, वह धर्म नहीं। गिरनार पर्वत पर स्थित दिगंबर जैन सिद्ध तीर्थ पर स्थित दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं टोंकें शाश्वत और सनातन हैं। टोंकों पर स्थापित चरण-चिह्न जैनधर्म की शाशवत धरोहर है। ये दिगंबर जैनधर्म की सत्य और अटल धरोहर है, पहचान है।

चरण-चिह्न दिगंबर जैनधर्म में होते है:

ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध है कि हजारों वर्षों से गिरनार पहाड़ पर स्थित दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं टोंकों पर निर्मित सभी प्राचीन और पुरातत्व संरक्षित चरण-चिह्न दिगंबर जैन धर्म के अनुसार ही निर्मित किये हुए हैं। ऐसे ही प्राचीन चरण-चिह्न झारखण्ड राज्य के मधुबन जिले में स्थित सम्मेदशिखर पहाड़ पर दिगंबर जैनधर्म के चौबीस में से बीस तीर्थंकर भगवंतों के मोक्ष की ओर गमन स्थल पर निर्मित हैं। दिगम्बर धर्म की भव्य आत्माओं ने अपनी साधना-तपस्या का शांत और एकांत स्थान पहाड़ों को चुना है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ/वृषभनाथ/आदिनाथ का साधना और तपस्या का स्थल कैलाश पर्वत पर स्थित अष्टापद पहाड़ क्षेत्र ही है। दिगंबर जैनधर्म में मोक्षस्थल पर निर्मित चरण-चिह्न आस्था, निष्ठा और वंदना स्थल है। जो पूजनीय, वंदनीय हैं। हिन्दू धर्म के प्रख्यात तीर्थ स्थान जगन्नाथपुरी, द्वारका, रामेश्वरम और बद्रीनाथ आदि पहाड़ पर नहीं, मैदानों पर हैं। नदियों के किनारों पर हैं। प्रयाग का कुंभ मेला और उज्जैन का सिहस्थ मेला नदी किनारे

शास्त्रीय भाषा का दर्जा , प्राकृत भाषा और हमारा कर्त्तव्य

- प्रो अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

भारत सरकार ने 12 अक्टूबर 2004 को 'शास्त्रीय भाषा' नामक एक नई श्रेणी बनाई थी। इसके अंतर्गत सरकार ने सर्वप्रथम तमिल भाषा को उसके एक हज़ार साल से ज़्यादा पुराने इतिहास, मूल्यवान माने जाने वाले ग्रंथों और साहित्य तथा मौलिकता के आधार पर शास्त्रीय भाषा घोषित किया। नवंबर 2004 में, साहित्य अकादमी के तहत संस्कृति मंत्रालय द्वारा शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने के लिए प्रस्तावित भाषाओं की पात्रता की जांच करने के लिए एक भाषा विशेषज्ञ समिति (LEC) का गठन किया गया था।जिसमें उन मानकों को तय किया गया जिनके आधार पर किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा स्वीकृत किया जायेगा| 2005 को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, शास्त्रीय भाषा घोषित करने के लिए निम्नलिखित मानदंड रेखांकित किए गए थे-

१. उस भाषा में प्राचीन ग्रंथ या दर्ज इतिहास होना चाहिए जो 1,500-2000 वर्षों से अधिक पुराना हो।
२. उस भाषा का प्राचीन साहित्य या ग्रंथों का एक महत्वपूर्ण संग्रह होना चाहिए ,जिसे बोलने वालों की पीढ़ियों द्वारा संरक्षित और मूल्यवान माना गया हो।
३. उस भाषा में एक अलग और मूल साहित्यिक परंपरा होनी चाहिए, जो किसी अन्य भाषा समुदाय से प्राप्त न हो।
४. शास्त्रीय भाषा और उसके आधुनिक रूपों के बीच स्पष्ट अंतर होना चाहिए। **वर्ष 2024** में किसी भाषा को शास्त्रीय घोषित करने के मानदंडों में संशोधन किया गया-
५. जिसके तहत "ज्ञान ग्रंथ (किसी अन्य भाषा समुदाय से उधार न ली गई मूल साहित्यिक परंपरा की उपस्थिति") को "ज्ञान ग्रंथ (विशेष रूप से कविता, पुरालेखीय और शिलालेखीय साक्ष्य के साथ गद्य ग्रंथ") द्वारा प्रतिस्थापित किया गया।

अतः यह माना गया कि भारतीय **शास्त्रीय भाषाएँ** समृद्ध ऐतिहासिक विरासत, गहन साहित्यिक परंपराओं और विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत वाली भाषाएँ हैं। इन भाषाओं ने इस क्षेत्र के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके ग्रंथ साहित्य, दर्शन और धर्म जैसे विविध क्षेत्रों में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

प्रसन्नता की बात है कि जैन आगमों की भाषा प्राकृत भाषा इन सभी मानदंडों को पूरा करती है | 2005 में संस्कृत को शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया। धीरे-धीरे, 2008 में तेलुगु और कन्नड़, और 2013 और 2014 में मलयालम और ओडिया भी इस सूची में शामिल हो गए। इसके लिए संबंधित भाषा वाले राज्यों की तरफ से प्रस्ताव भेजना होता है। इसके बाद साहित्य कला अकादमी के तहत भाषा विशेषज्ञ समिति की तरफ से प्रस्ताव पर विचार के बाद मान्यता देने की प्रक्रिया पूरी होती है।वर्तमान में ३ अक्टूबर २०२४ को केंद्र सरकार ने प्राकृत, मराठी, पाली, असमिया और बंगाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया है, जिससे उनकी समृद्ध विरासत को मान्यता मिली है। ये शास्त्रीय भाषाएं स्वतंत्र परंपराओं और समृद्ध साहित्यिक इतिहास वाली प्राचीन भाषाएं हैं जो विभिन्न साहित्यिक शैलियों और दार्शनिक ग्रंथों को प्रभावित करती रहती हैं। मंत्रिमंडल की नवीनतम मंजूरी के साथ, भारत में मान्यता प्राप्त शास्त्रीय भाषाओं की कुल संख्या अब 11 हो गई है।

शास्त्रीय दर्जा मिलने से लाभ -

शास्त्रीय भाषाएं भारत की गहन और प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की संरक्षक के रूप में काम करती हैं, जो प्रत्येक समुदाय के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मील का पत्थर होती हैं । शास्त्रीय भाषा के रूप में भाषाओं को शामिल करने से रोजगार के महत्वपूर्ण अवसर पैदा होंगे, खासकर अकादमिक और रिसर्च के क्षेत्र में। इसके अलावा, इन भाषाओं के प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण, दस्तावेजीकरण और डिजिटलीकरण से संग्रह, अनुवाद, प्रकाशन और डिजिटल मीडिया में रोजगार के अवसर पैदा होंगे।शास्त्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 2020 में संस्कृत भाषा के लिए तीन केंद्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किए थे। प्राचीन तमिल ग्रंथों के अनुवाद की सुविधा, शोध को बढ़ावा देने और यूनिवर्सिटी के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान की स्थापना की गई थी। शास्त्रीय भाषाओं के अध्ययन और संरक्षण के लिए, मैसूर में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान के तत्वावधान में शास्त्रीय कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और ओडिया में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए गए थे | किसी भाषा को शास्त्रीय घोषित कर दिया जाता है, तब उसे उस भाषा के अध्ययन के लिये उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है और साथ ही प्रतिष्ठित विद्वानों के लिये राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने के मार्ग भी खुल जाते है।इसके अतिरिक्त, **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** से अनुरोध किया जा सकता है कि वह केंद्रीय विश्वविद्यालयों से शुरुआत करते हुए शास्त्रीय भाषाओं के विद्वानों के लिये शैक्षणिक पीठ स्थापित करे।

प्राकृत भाषा का महत्त्व –

प्राकृत भाषा, व्याकरण और साहित्य का इतिहास ढाई हज़ार वर्ष से भी ज्यादा पुराना है , वैदिक काल में भी यह जन भाषा के रूप में विख्यात रही है | भगवान् महावीर और महात्मा बुद्ध ने अपने उपदेशों का माध्यम इसी जन भाषा को बनाया था, महात्मा बुद्ध ने जिस प्राकृत भाषा में अपने उपदेश दिए उसे पालि कहा जाता है और पालि में निबद्ध ग्रन्थ त्रिपिटक कहलाते हैं | भगवान् महावीर के सम्पूर्ण उपदेश अर्धमागधी प्राकृत और शौरसेनी प्राकृत में निबद्ध हैं जिन्हें जैन आगम कहा जाता है | महाराष्ट्री,शौरसेनी,मागधी आदि प्राकृत भाषा में अन्यान्य नाटक, पुराण, महाकाव्य, मुक्तक काव्य, कथायें और अन्य साहित्य प्रथम शती से लेकर बारहवीं तेरहवीं शती तक उपलब्ध होते हैं | भारत के प्राचीनतम शिलालेखों की भाषा प्राकृत रही है | प्राकृत भाषा से देश की कई भाषाओँ ,उपभाषाओं और बोलियों का विकास हुआ है | वर्तमान में इस भाषा में समाचार पत्र और शोधपत्रिकाओं का प्रकाशन भी होता है | जैन परंपरा में समाज में आबाल गोपाल प्राकृत मन्त्र, गाथा , गीत, भजन, स्तोत्र, स्तुति,

प्रतिक्रमण, अभिवादन आदि बोलने की भी सुदीर्घ परंपरा आज भी प्रायोगिक रूप से विद्यमान है | अनेक संत और विद्वान् प्राकृत भाषा में संभाषण और प्रवचन भी करते हैं|

शास्त्रीय दर्जा से लाभ कैसे उठायें -

केंद्र सरकार ने प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा के दर्जे की घोषणा की तो जैन समाज में अधिकांश लोगों को समझ में ही नहीं आया कि ये क्या हुआ ? मेरे पास जैन समाज के एक बड़े पदाधिकारी जी और एक श्वेताम्बर मुनि जी का का फोन आया ,उन्होंने पूछा इससे समाज को क्या लाभ है ? मैंने उनसे पलट कर पूछा कि आप तो समाज के प्रमुख हैं ,आप बतलाइए आपको क्या लाभ चाहिए ? लाभ का मतलब क्या होता है ? इस पर वे यह नहीं बता पाए कि हमें क्या लाभ चाहिए ? क्योंकि न कोई विज़न है और न कोई मिशन है | उन्हें तो यह समझाने में ही बहुत वक्त लग गया कि प्राकृत भाषा क्या चीज है ? यही कारण है कि कुछ जागृति लाने के लिए यह लेख मैं अपनी समझ से यह सोचकर लिख रहा हूँ कि शायद ऐसे कर्णधार भी इस आलेख को पढ़ लें|

यद्यपि प्राकृत भाषा जनभाषा रही है और उससे भारत की सामान्य साहित्यिक परंपरा भी पूरी तरह से जुडी रही है किन्तु भगवान् महावीर की वाणी इसी भाषा में निबद्ध होने से जैन धर्म ,संस्कृति और समाज की विशेष भावना इस भाषा से स्वाभाविक रूप से जुडी है | यही कारण है इस भाषा को सरकारी संरक्षण न के बराबर प्राप्त होने के बाद भी जैन संतों और देश विदेश के विद्वानों ने अपने बलबूते पर समाज के आर्थिक सहयोग से इसे आज तक संरक्षण प्रदान किया है | किन्तु अब इसे शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिल जाने के कारण भारत सरकार की भाषाओँ के संरक्षण और संवर्धन की रीति और नीति में सम्मिलित होने से इसे राष्ट्रिय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त होने का मार्ग सुगम हो गया है | भविष्य में भारत सरकार इस भाषा के लिए पृथक से सरकारी संस्थान,अकादमी आदि स्थापित करेगी,इस भाषा के लिए अनुदान जारी करेगी ,तब उसका लाभ उठाने के लिए समाज को भी अपनी तरफ से अभी से तैयारी कर लेनी चाहिए ताकि वे सरकारी योजनाओं का लाभ उठा सके | मेरे विचार से निम्नलिखित कदम समाज को भी उठाने चाहिए –

१. प्रत्येक शहर में प्राकृत जैनागम शोधसंस्थान तथा पुस्तकालय , पाण्डुलिपि संरक्षण केंद्र की स्थापना करें और उसका पंजीयन अवश्य करवाएं|
२. मंदिर,स्थानक आदि स्थलों पर प्राकृत पाठशालाओं की स्थापना अवश्य करें | पूर्व से जो पाठशालाएं संचालित हैं उनके नाम के साथ 'प्राकृत' शब्द जोड़ दें ,जैसे आचार्य शान्तिसागर जैन प्राकृत पाठशाला, वीतराग विज्ञान जैन प्राकृत पाठशाला आदि |भविष्य में ये पाठशालाएं सरकारी अनुदान भी प्राप्त करने में अर्ह होंगी|
३. प्राकृत भाषा के प्रशिक्षण के लिए स्वतंत्र प्राकृत शिविरों का आयोजन करें |कोई भी शिविर आयोजित करें उसमें कोई प्राकृत का ग्रन्थ पढ़ाने की एक कक्षा लगा कर उस शिविर के नाम में 'प्राकृत' जोड़ दें | जैसे 'जैनदर्शन; 'समयसार', 'द्रव्य संग्रह', 'उत्तराध्ययन', गोम्मटसार, वीतराग विज्ञान, श्रावक संस्कार शिविर आदि शिविर हैं तो उनके नाम में 'प्राकृत' जोड़ दें, क्योंकि उस शिविर में या तो प्राकृत के ग्रन्थ पढ़ा रहे हैं या प्राकृत आगम में प्रतिपादित श्रावकाचार या ज्ञान का प्रशिक्षण दे ही रहे हैं|
४. संस्थाओं के लोगो (ध्येय वाक्य)प्राकृत आगमों में से ही रखें|
५. जनगणना में भाषा के कॉलम में अपनी मातृभाषा या अन्य भाषा के रूप में 'प्राकृत'भाषा अवश्य लिखवाएं|
६. संस्थाओं में धार्मिक के साथ साथ शैक्षणिक और अकादमिक गतिविधियों को बढ़ावा दें|
७. जैन समाज द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थाओं में प्राकृत भाषा पढना और पढ़ाना अनिवार्य कर दें |प्रार्थना में प्राकृत आगम की गाथाएं पढ़ी जाएँ|
८. जैन बन्धु या जैन समाज द्वारा संचालित महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में एक 'प्राकृत जैन आगम अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र' की स्थापना विधिवत् अभी से कर लें|
९. अपने शहर में स्थापित सरकारी विश्वविद्यालय के कुलपति को प्राकृत भाषा और जैन विद्या विभाग खोलने का प्रस्ताव दें|
१०. अपनी राज्य सरकार को प्राकृत भाषा अकादमी खोलने हेतु समाज से प्रस्ताव भेजें|
११. प्राकृत भाषा में निबद्ध आगम ग्रन्थ और साहित्य का प्रकाशन करें|
१२. प्राकृत और जैनागम के उपलब्ध विद्वानों की सूची और संपर्क अपने पास अद्यतन रखें|
१३. भविष्य के लिए कई तरह की योजनायें पहले से बना कर रखें|
१४. प्राकृत भाषा और साहित्य से सम्बंधित ज्ञान विज्ञान और उनके आधुनिक सन्दर्भ से सम्बंधित सेमिनार, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि अवश्य कराएँ तथा उसकी पूरी रिपोर्ट सुरक्षित रखें|

आपके इसी प्रकार के अन्यान्य कार्यों के आधार पर भविष्य में आप भारत सरकार की योजनाओं से जुड़कर उनसे वित्तीय अनुदान प्राप्त कर सकते हैं| सभी जानते हैं कि प्राकृत भाषा और जैन विद्या का अध्ययन और अनुसन्धान बहुत श्रम साध्य और व्यय साध्य होता है | अरुचि के कारण समाज से इस हेतु दान के आधार पर इन भाषा और ज्ञान परंपरा को अकादमिक स्तर पर जीवित रखना बहुत कठिन है | सरकार इन कार्यों के लिए करोड़ों का अनुदान देती है किन्तु लेने वाला कोई नहीं होता क्योंकि हम, हमारी संस्थाएं सरकारी शर्तों को पूरा करने में असमर्थ होते हैं | हमारे पास न वैसा इंफ्रास्ट्रक्चर होता है न ऑफिसियल कार्यशैली और न ही पुराने कार्यों का कोई रिकॉर्ड | अन्य समाज के लोग इस कार्य में बहुत व्यवस्थित और प्रोफेशनल होते हैं, वे इन योजनाओं का लाभ उठा कर सरकारी धन से ही अपने धर्म का ज्ञान विज्ञान संरक्षित और संवर्धित कर लेते हैं | जैन समाज इस विषय में अभी बहुत पिछड़ा है |हमें इस दिशा में बहुत कार्य करने चाहिए, ये स्थाई और दूरगामी फल और प्रभावना वाले कार्य हैं, इसमें तत्काल मंच माला सम्मान नाम नहीं मिलता, लेकिन जिन शासन की बहुत प्रभावना होती है और जैन समाज धर्म संस्कृति साहित्य की जड़ें गहरी बनती हैं|

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी

धर्म चिह्न

मानस्तंभ

125 वर्ष

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष

22 अक्टूबर 2026 - 22 अक्टूबर 2027

हमारे तीर्थ–हमारी धरोहर

125 वा

भारतवर्षीय दि

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के
रूपरेखा आंचलिक स्तर पर प्रस्तावित है जि

प्रस्ता

(दी

धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन।

- अंचल के सदस्यों का डाटा व्यवस्थित कराना
- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के नए सदस्य बनाना।
- मन्दिरों को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का सदस्य बना कर कमेटी से जोड़ना।
- समस्त साधु परमेष्ठी के प्रभाव से तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत कराना।
- आंचलिक युवा सम्मेलन
- आंचलिक महिला सम्मेलन
- जैन मन्दिरों अध्यक्ष/मंत्रियों का समागम सम्मेलन।
- अंचल के जैन मन्दिरों में धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन।
- अंचल में अवस्थित तीर्थक्षेत्रों का सर्वेक्षण।
- आंचलिक वार्षिक तीर्थाटन
- तीर्थों पर सफाई अभियान चलाना।
- तीर्थों पर वृक्षारोपण का कार्य करना।

अंचल	सदस्य	मंदिर सदस्य	गुल्लक
दिल्ली	200	50	50
उत्तर प्रदेश/उत्तराखण्ड	100	50	50
झारखण्ड/बिहार	50	25	25
गुजरात	100	50	50
महाराष्ट्र	200	100	100
राजस्थान	100	50	50
मध्य प्रदेश	100	50	50
तमिलनाडु	50	25	25
कर्नाटक	100	50	50

ं स्थापना वर्ष

ंगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

125वां स्थापना वर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर महोत्सव रूप देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों की सका हम सभी को समन्वय और विचार विमर्श कर कियान्वयन करना और कराना है।

वित आंचलिक लक्ष्य

ावली 2024 से दीपावली 2025 तक)

घर–घर गुल्लक	कूपन राशि				
	रु. 100	रु. 200	रु. 500	रु.1100	रु. 2000
4000	6000	5000	4000	3000	2000
2000	8000	4000	4000	2500	1500
600	2000	10000	1000	1500	1500
2000	6000	5000	4000	3000	2000
10000	40000	10000	10000	5000	5000
2000	8000	7000	5000	3000	2000
2000	8000	7000	5000	3000	2000
500	1000	1000	1000	500	500
1000	2000	1000	1000	2500	1500

धन संग्रह हेतु

- घर–घर तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखवाना।
- मन्दिरों में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखवाना।
- जैन प्रतिष्ठानों से **CSR** के माध्यम से फण्ड एकत्रित करना।
- विभिन्न आयोजनों हेतु प्रायोजक सुनिश्चित करना।
- धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में कूपन के माध्यम से धन एकत्रित करना।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
खाता संख्या- 13100100008770
IFSC CODE - BARB0VPROAD
BRANCH- V.P. ROAD MUMBAI- 400004

आवश्यक है अपने देश का "भारत " नामकरण

- प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी

दो वर्ष पूर्व महामहिम राष्ट्रपति की ओर से दिल्ली में आयोजित **जी २० सम्मेलन** के समय भेजे आमंत्रण पत्र में गुलामी का प्रतीक अपने देश का नाम 'इण्डिया' के स्थान पर स्वाभिमान का प्रतीक **'भारत'** लिखे जाने की पहल का हम सभी हृदय से स्वागत किया था। अतः अब अपने देश का एकमात्र नाम भारत को संवैधानिक रूप में स्वीकार कर इसे लागू किया जाना अति आवश्यक है। क्योंकि किसी भी सार्वजनिक मुद्दे की सर्वसम्मति अथवा आम सहमति सम्भव नहीं हो पाती, किन्तु लोकतंत्र में बहुमत का जरूर ध्यान रखा जाता है, जो कि इसके पक्ष में है। बाकी का तो अपना-अपना अलग चिंतन, पक्ष, दृष्टिकोण अथवा स्वार्थ होना स्वभाविक है।

इस गम्भीर विषय पर आजादी के बाद से बीच-बीच में अनेक बार आवाजें उठती रहीं हैं। २५-३० वर्षों से तो सुप्रसिद्ध सन्त आचार्य श्री विद्यासागर जी 'इंडिया नहीं, भारत कहो' और सभी 'मातृभाषाओं' को बढ़ावा देने का जोरदार अभियान निरंतर चलाते रहे हैं। देश के जो भी 'माननीय' या अन्य गणमान्य इनसे मिलने, इनके दर्शनार्थ आते रहे हैं, वे उन्हें अपने देश का भारत नामकरण करने और शिक्षा-व्यवस्था में 'मातृभाषा' लागू करने की ही प्रमुखता से सलाह और बल सदा देते रहे हैं।

स्वतंत्रता के बाद जब हमारा संविधान लिखा जा रहा था, तब भी अपने देश के नामकरण के अनेक सुझाव आए। किन्तु संविधान निर्माताओं के समक्ष जब उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि-खण्डगिरि के कलिंग-नरेश महाराजा खारवेल द्वारा बाईस सौ वर्ष पूर्व (ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी) अति प्राचीन हाथी गुम्फा में ब्राह्मी लिपि और प्राकृत भाषा में सत्रह पंक्तियों में लिखाए गये बृहद् शिलालेख की जानकारी हुई। तब इस लेख की दसवीं पंक्ति में **'भारत वर्ष'** लिखे जाने का सर्वप्राचीन शिलालेखीय प्रमाण के आधार पर अपने देश का 'भारत' नामकरण मान्य हुआ। किन्तु 'इंडिया' नाम हटाया नहीं गया। सन्तुष्टि के नाम पर यह भी चलने दिया गया।

हाथी गुम्फा के उक्त शिलालेखीय **'भारत'** नामकरण के प्राचीन इस प्रमाण के साथ ही अन्यान्य अनेक महत्वपूर्ण प्रमाणों पर भी हमारा ध्यान जाना आवश्यक है। श्रीमद्भागवत पुराण सहित वायुपुराण, लिंगपुराण, स्कन्दपुराण, विष्णुमहापुराण, अग्निपुराण जैसे अनेक वैदिक पुराणों में यह उल्लेख आया है कि प्रलयकाल के बाद

स्वायम्भुव मनु के ज्येष्ठ पुत्र प्रियव्रत ने रात्रि भी प्रकाश रखने की इच्छा से ज्योतिर्मय रथ के द्वारा सात बार भूमंडल की परिक्रमा की । इस परिक्रमा के समय रथ की लीक से जो सात मंडलाकार गड्ढे बनें , वे ही सप्तसिंधु हुए । फिर इनके अंतर्वर्ती क्षेत्र जम्बूद्वीप , पुष्करद्वीप आदि सात महाद्वीप हुये , ये क्रमशः दुगुने बड़े होते गए और इन सबके मध्य में जम्बूद्वीप स्थित है । ब्रह्ममहापुराण (१८.१३) में कहा है –**जम्बूद्वीपः समस्तानामेषां मध्यसंस्थितः।**

विष्णुमहापुराण (२.१.१२) के अनुसार प्रियव्रत ने अपने दस पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र आग्नीध्र को जम्बूद्वीप का राज्य सौंपा। इन्हींआग्नीध्र ने अपने नौ पुत्रों में ज्येष्ठ नाभिराज नाम से प्रसिद्ध अजनाभ को जम्बूद्वीप के दक्षिण की ओर का " हिमवर्ष " क्षेत्र (इसे ही अब " भारतवर्ष " कहते हैं) दे दिया। लिंग महापुराण (४७.६) में कहा है – " **नाभेस्तु दक्षिणं वर्षं हेमाख्यं तु पिता ददौ"** । विष्णुमहापुराण (२.१.१८) में भी कहा है – " **पिता दत्तं हिमाह्वन्तु वर्षं नाभेस्तु दक्षिणम्** "।

इन्हीं नाभिराज के नाम से भारतवर्ष का पूर्वनाम "अजनाभवर्ष " प्रसिद्ध था।

भागवत महापुराण (५.७.३) में कहा है – **" अजनाभं नामैतद् वर्षं भारतमिति यत् आरभ्य व्यपदिशन्ति "** । यही अजनाभ अर्थात् नाभिराज जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता थे।

अपने दस पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र आग्नीध्र को जम्बूद्वीप का राज्य सौंपा। इन्हींआग्नीध्र ने अपने नौ पुत्रों में ज्येष्ठ नाभिराज नाम से प्रसिद्ध अजनाभ को जम्बूद्वीप के दक्षिण की ओर का " हिमवर्ष " क्षेत्र (इसे ही अब " भारतवर्ष " कहते हैं) दे दिया। लिंग महापुराण (४७.६) में कहा है – **" नाभेस्तु दक्षिणं वर्षं हेमाख्यं तु पिता ददौ"** । विष्णुमहापुराण (२.१.१८) में भी कहा है – " पिता दत्तं हिमाह्वन्तु वर्षं नाभेस्तु दक्षिणम् "। इन्हीं नाभिराज के नाम से भारतवर्ष का पूर्वनाम "अजनाभवर्ष " प्रसिद्ध था।

भागवत महापुराण (५.७.३) में कहा है – " अजनाभं नामैतद् वर्षं भारतमिति यत् आरभ्य व्यपदिशन्ति " । यही अजनाभ अर्थात् नाभिराज जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता थे।

लिंगपुराण (४७/२०-२४) में कहा है-

ऋषभं पार्थिवश्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूजितम्।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीर-पुत्रशताग्रजः ।।
सोभिषिच्याथ ऋषभो भरतं पुत्रवत्सलः।
.... तस्मान्नु भारतं वर्ष तस्य नाम्ना विदुर्बुधा।।

अर्थात् ऋषभ सब राजाओं से पूजित और सभी में श्रेष्ठ थे। इन्हीं ऋषभ से वीर पुत्र भरत उत्पन्न हुए। ये भरत महाराजा ऋषभ के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ थे। पुत्र वत्सल महाराजा ऋषभ ने भरत को राजा के रूप में अभिषेक करके स्वयं अपनी ज्ञानेन्द्रिय रूपी सर्पों को वश में करके ज्ञान और वैराग्य का आश्रय लेकर आत्मा में सर्वात्मना से स्थापित होने का व्रत ग्रहण किया। इन्हीं ऋषभदेव ने हिमवान पर्वत के दक्षिण में स्थित राष्ट्र ज्येष्ठ पुत्र भरत को दे दिया। इसीलिए विद्वान् लोग इस राष्ट्र को भारतवर्ष नाम से पुकारते हैं।

इसके पूर्व इस देश का नाम 'अजनाभवर्ष' भी ऋषभदेव के पिता नाभिराज के नाम पर प्रचलित रहा है। नाभिराज का ही प्रसिद्ध नाम अजनाभ था। श्रीमद्भागवत पुराण (५-७-३) में कहा है- **'अजनाभ - नामैतद् वर्षं भारतमिति यत् आरभ्य व्यपदिशन्ति'** । वस्तुतः सृष्टि के आदि मनु स्वायंभुव मनु के पौत्र नाभिराज थे। इन्हीं के नाम से इस देश का प्राचीन नाम 'अजनाभवर्ष' कहा जाता था। इनके पौत्र 'भरत' एक अत्यधिक प्रतापी चक्रवर्ती सम्राट हुए, तभी से अपने इस देश का नाम 'भारतवर्ष' प्रसिद्ध हो गया।

इस प्रकार ऋषभदेव संन्यास ग्रहण करने और तपश्चर्या हेतु वनगमन के पूर्व अपने सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती को अपने राज्य का जो यह खण्ड (क्षेत्र) सौंपा, वह **"भारतवर्ष"** नाम से प्रसिद्ध हुआ । यही बात विष्णुमहापुराण (२.१.२८) में भी इस प्रकार वर्णित है –

"ऋषभात् भरतो जज्ञे, ज्येष्ठः पुत्रशतस्य सः ।
ततश्च भारतं वर्षमेतल्लोकेषु गीयते " ॥
भरताय यतः पित्रा दत्तं प्रतिष्ठिता वनम् ।

वायुपुराण (३३.५२), ब्रम्हांड महापुराण (२.१४.६२), लिंगपुराण (४५.२३.२४) में कहा है –

" हिमाह्वं दक्षिणम् वर्षं भरताय न्यवेदयत् ।
तस्मात् तद् भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुबुधः ॥

मार्कण्डेय महापुराण (५०.४०.४१) में भी स्पष्ट कहा है –

" हिमाह्वं दक्षिणम् वर्षं भरताय पिता ददौ ।
तस्मात्तु भारतं वर्षं तस्यनाम्ना महात्मनः ॥

मत्स्यमहापुराण (११३.२८) का उल्लेख भी पूर्वोक्त कथन को प्रमाणित कर रहा है –

इदं हैमवतं वर्षं भारतं नाम विश्रुतम् ।

स्कन्ध पुराण (३७/५७) में भी कहा है–

नाभैः पुत्रश्च ऋषभः ऋषभात् भरतोऽभवत्।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते।

अर्थात् नाभि के पुत्र ऋषभदेव और ऋषभदेव के पुत्र भरत हुए। इन्हीं भरत के नाम से इस देश का 'भारत' प्रसिद्ध हुआ)।

महाराजा नाभिराज के पुत्र भगवान ऋषभदेव (जैनधर्म के चौबीस तीर्थकरों में प्रथम तीर्थंकर) के सौ पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र 'भरत' चक्रवर्ती के नाम पर इस देश नाम **'भारत वर्ष'** प्रचलित हुआ।

हमने यहाँ भारत नामकरण विषयक जैन शास्त्रों का एक भी प्रमाण नहीं दिया, अपितु मात्र वैदिक पुराणों के इतने अधिक और भी बहुत से प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं कि ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम पर ही इस देश का नाम भारत वर्ष है. इन पुष्ट प्रमाणों के बावजूद कुछ सज्जन और सरकार , न मालूम क्यों जानते हुए भी अनदेखी कर रही है ?

जहां तक दुष्यंत पुत्र भरत की बात है , इस संबंध में भारतीय विद्या भवन , मुंबई से प्रकाशित भारतीय संस्कृति और इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी पुस्तक "फंन्डामेंटल युनिटी ऑफ इण्डिया "में स्पष्ट लिखा है कि "लगता है सुनी – सुनाई बातों के आधार पर ही दुष्यन्तपुत्र भरत के नाम से अपने देश का नामकरण माना है । कहाँ तक कहा जाए ? **आधुनिक काल के इतिहासकारों ने किस प्रकार भारतीय इतिहास का सर्वनाश किया है , यह व्यापक अनुसंधान का विषय है।**

इस संदर्भ में सुधी विद्वानों से अनुरोध है कि इन अनेक पुष्ट प्रमाणों की अनदेखी ना करके अपनी बृहद् और विविध भारतीय संस्कृति की समृद्धि में जिस किसी धारा का जो भी जैसा योगदान प्राचीन काल से अब रहा है। उसे उसका वैसा महत्व और श्रेय बिना किसी आग्रह के देकर अपनी उदारता का परिचय देना चाहिए। क्योंकि इन सभी धाराओं ने मिलकर ही अपनी भारतीय संस्कृति को महानता प्रदान करते हुए विश्व गुरु बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। किन्हीं भी प्राचीन प्रमाणों और तथ्यों को अनदेखा करना अपनी पवित्र संस्कृति और साहित्य के साथ अन्याय करने जैसा होगा। इसी में सभी का श्रेय और प्रेय है।

इस तरह अपने देश के नामकरण को लेकर चर्चाएं- परिचर्चायें और विमर्श जारी है। अतः अब अच्छा अवसर है, अपने देश का एक मात्र नाम 'भारत' को संवैधानिक मान्यता प्रदान की जाए।

तीर्थों पर रखी जा रही गुल्लकें

24 नवंबर 2024 को मध्यांचल कमेटी के शपथ ग्रहण समारोह के पश्चात बुंदेलखंड के चंदेल कालीन भगवान श्री शांतिनाथ जी की मूल नायक प्रतिमा वाले प्राचीन मंदिर एवं अनेकों छोटे बड़े मंदिरों के समूह सिद्ध क्षेत्र एवं अतिशय क्षेत्र श्री अहार जी में तथा 25 नवंबर 2024 को भारत वर्ष की राजधानी दिल्ली प्रदेश में विराजित मुगलकालीन लाल पत्थरों से बने जैन अनुयायियों के लोकप्रिय ऐतिहासिक दिगंबर जैन लाल मंदिर में वैदिक शिलान्यास समारोह के पश्चात तीर्थक्षेत्र कमेटी, मंदिर कमेटी तथा समाज के पदाधिकारियों के सान्निध्य में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखवाई गई।

मानव जीवन को सार्थक बनाने के उपाय

डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन भारती, सनावद

संसार में जीव का मनुष्य के रूप में जन्म लेना अनेक अच्छे कार्यों का सुपरिणाम है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि मानव जीवन का कितना महत्व है। संत कवि तुलसीदास जी मानव मन की महत्ता के संबंध में लिखते हैं-

बड़े भाग्य मानुष तन पावा, साधन धाम मोक्ष कर द्वारा

अर्थात् मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है, यदि इसे साधन का धाम बनाया जाए तो इससे मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है। जैन धर्म में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र को मोक्ष मार्ग बताया गया है जिसमें देव, शास्त्र,गुरु की पूजा - आराधना को महत्व दिया गया है। इसमें वीतराग जिन देव की पूजन को अंतरंग की पवित्रता के लिए आवश्यक माना गया है। हम सभी बाह्य क्रियाओं में अष्ट द्रव्यों के चढ़ाने पर ज्यादा ध्यान देते हैं लेकिन जितने समय तक पूजन की उसमें अपने अंतर मन में वीतराग भगवान की छवि को कितने मिनट ध्यान दिया, क्या आपने इस पर कभी विचार किया? जबकि पूजन में हम पढ़ते हैं -

निरखौ अंग - अंग जिनवर को जिससे मिलती शांति अपार ।।

अर्थात् व्यक्ति को पूजन करते समय वीतराग जिनदेव की शांत छबि बार-बार दिखाना चाहिए कहा गया है -

छबि वीतरागी नगन मुद्रा दृष्टि नाशा पै धरें
वासु प्रातिहार्य अनंत गुण युत कोटि रवि छवि कौ हरें

हम विचार करें कि मानव जीवन में यह छबि दिख रही है? यदि नहीं तो क्यों? इसका उत्तर है कि जब वीतरागता का भाव आता है तभी प्रभु के

दर्शन होते हैं। पूज्य मुनि श्री प्रयोग सागर महाराज ने एक प्रवचन के माध्यम से बताया था कि वीतराग प्रभु और निर्ग्रंथ गुरु का दर्शन सबसे अच्छा टॉनिक है जिससे राग-द्वेष रूपी परिणाम शांत हो जाते हैं। वीतराग देव की पाषाण मूर्ति व धातु मूर्ति के दर्शन से हमारे मन में यह विचार बनते हैं कि हमारे आत्मा के परिणाम भी वैसे होना चाहिए। इससे परिणामों में विशुद्ध बढ़ती है।निर्ग्रंथ गुरु के दर्शन और सत्संग से राग द्वेष के परिणाम शांत होते हैं जिनसे परिणामों में विशुद्धि आती है, अतः गुरुओं की सत्संगति भी सम्यक चारित्र के धारण करने में आवश्यक है। सत्संग से मनुष्य के जीने के तौर-तरीके बदल जाते हैं, उसे सही राह मिल जाती है। परिवार के बूढ़े - बुजुर्ग यदि बाल्यावस्था से बच्चों को गुरुओं का सत्संग करायेंगे तो उनकी दुनिया ही अलग होगी। उनको भक्ष्य और अभक्ष्य का ज्ञान होगा तो वे अभक्ष्य के सेवन से बचेंगे और यह जानेंगे कि

एहि तन कर फल विषय न भाई
स्वर्ग स्वल्प अंत दुखदाई।।

अर्थात् यह मनुष्य शरीर भोगों के लिए नहीं मिला है,क्योंकि भोग का अंत दुखदाई होता है भले ही स्वर्ग का हो। जैन दर्शन में बताया गया है कि स्वर्गों के देव व्रत, संयम का पालन नहीं कर सकते क्योंकि उनका आहार मानसिक होता है। जब उन्हें भूख की इच्छा होती है तो कंठ से स्वतः अमृत झर जाता है और उसी से उनकी इच्छा पूर्ति हो जाती है। मनुष्य को इसलिए श्रेष्ठ बताया है कि वह संयम धारण कर व्रत उपवास करता हैऔर आत्म नियंत्रण की महान शक्ति उसके पास होती है। अतः हमें मनुष्य भव को सार्थक करने के लिए सद्गुरुओं की तप साधना से प्रेरणा लेकर आत्मा को परमात्मा बनाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। सार्थक जीवन व्यतीत करने के लिए जीवन जीने की कला सीखनी चाहिए।

सुखी जीवन के लिए आवश्यक है कि हम वीतराग देव की भक्ति में अरिहंत और सिद्ध परमात्मा की भक्ति, पूजन, आराधना और उपासना करें तथा वैराग्य पथ पर अग्रसर होकर निर्ग्रंथ मुनियों के समान संयम और तप की आराधना करें। दोष, दुर्गुण और अहंकार को दूर रखें। मद्य,मांस, मधु के सेवन तथा पांचो पापों से दूर रहें। प्रथमानुयोग में वर्णित कथाओं से ज्ञात होता है कि कितनी पर्यायें उन्होंने धारण की, तब जाकर उन्हें मनुष्य भव मिला। तीर्थंकर भव की साधना एक काल की साधना नहीं थी, अनंत पर्यायों के शुभ कार्यों के फल स्वरुप तीर्थंकर प्रकृति का बंध हुआ और तीर्थंकर बनने के बाद वे मोक्ष फल को प्राप्त कर सके। इसलिए "लब्धि "यह कहती है कि लब्धि को उपलब्धि बनाओ। यदि मानव तन मिला है तो वीतराग स्वरूप अरहंत,सिद्ध, परमात्मा की भक्ति तथा वैराग्य पथ पर अग्रसर होकर मोक्ष को प्राप्त करने का सार्थक उपाय करो। नियमित धार्मिक क्रियाओं को करने का संकल्प कर आगे बढ़ो तभी धर्म के फलको प्राप्त कर सकोगे।

श्री मुनिसुव्रतनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र-जहाजपुर

डॉ. सविता जैन, अधिष्ठात्री शीतलतीर्थ-रतलाम

राजस्थान के मेवाड़ प्रान्त के भीलवाड़ा जिले के अन्तर्गत प्राचीन नगरी जहाजपुर स्थित है। अरावली की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य यह पुण्य नगरी बसी है। २३ अप्रैल, सन् २०१३, मंगलवार, महावीर जयंति के शुभ दिन अपराजिता देवी के साथ भगवान श्री १००८ मुनिसुव्रतनाथ भूगर्भ से प्रगट हुए। यह दिन इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिख गया है। जहाजपुर वासियों की वे हजारों आंखें धन्य हो गई जिन लोगों ने प्रभु को भूमि से प्रगट होते हुए देखा था। सभी लोग एक ही बात कह रहे थे कि आर्यिकारत्न श्री स्वस्ति भूषण माता जी ने अष्टान्हिका महापर्व में सिद्धचक्र महामंडल विधान के मध्य प्रवचन में अनेकों बार बोला था कि यहां और मूर्तियां निकलेगी और नया क्षेत्र बनेगा। उनके द्वारा कही बात आज पूर्णत: सत्य हो गई।

भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की विश्वविख्यात अति मनोज्ञ, महान् अतिशय सम्पन्न, चमत्कारी, अद्वितीय शासन यक्ष–यक्षिणियों और देवों से रक्षित प्रतिमा के भूगर्भ से प्रगट होने के समय प्रतिमा का रंग नीलम जैसा नीला था, मंदिर में आने के पश्चात् हरे रंग की हो गई, कुछ समय बाद स्लेटी रंग की हुई, फिर श्याम वर्ण में परिवर्तित हो गई। इस प्रतिमा के साथ १० अन्य तीर्थंकर प्रतिमायें एवं ४ शासन देवियां भी प्राप्त हुई थी।

प्रतिमा को निकालते समय प्रतिमा इतनी भारी हो गई कि जे.सी.वी. मशीन से निकालने में भी कठिनाई हो रही थी, पर वहीं प्रतिमा पुराने जीर्ण–शीर्ण हाथ ठेले पर विराजित करके श्रावकगण मंदिर ले आये, उस समय भगवान इतने हल्के हो गये कि ६–७ लोगों ने प्रतिमा को आसानी से ठेले सहित मंदिर में लाकर विराजमान कर दिया। जहाजपुर से २० कि.मी. दूर देवली नगर में आर्यिकारत्न श्री १०५ स्वस्तिभूषण माताजी विराजमान थी, जहाजपुर समाज ने माता जी से चलने का आग्रह किया। पर माता जी ने कहा हमें कहीं और विहार करना है। पर दूसरे दिन सभी बड़े उत्साह एवं गंभीरभाव से आये और कहा 'माता जी प्रतिमाएं प्रशासन के अधिकार में है, आपके चलने से प्रतिमाएं समाज को मिल जायेंगी।' माता जी ने विचार किया मुझे ऐसा प्रयास करना चाहिए जिससे प्रतिमाएं मिल जाएं। अत: २९ अप्रैल २०१३ को माता जी जहाजपुर वापिस आई, अनेक दिनों तक परिश्रम करने के बाद श्रुत पंचमी के पावन दिन प्रतिमाएं समाज को प्राप्त हो गई, २१–२२–२३ जून २०१३ का महामस्तकाभिषेक का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, हजारों लोग आये।

माता जी ने टोंक समाज के आग्रह पर वहां वर्षायोग करने का मन बना लिया था, पर जहाजपुर समाज के विशेष आग्रह पर पूज्य आचार्य श्री १०८ ज्ञानसागर जी महाराज ने जहाजपुर चातुर्मास की अनुमति दे दी, जहाजपुर में आर्यिका श्री का १८ वां वर्षायोग स्थापित होगा ऐसी सूचना से चारो और खुशी की लहर फैल गई, नव तीर्थ सृजन हेतु विचार विमर्श होने लगा एवं योजनाएं बनने लगी।

२१ जुलाई २०१३ वर्षायोग कलश स्थापना में यू.पी., एम.पी, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान से हजारों श्रावक गण आये थे। रात्रि ८:३० बजे भगवान के नाभि स्थान के आस पास स्पंदन (श्वास लेने जैसा) होने लगा, फिर अनेक माह तक लाखों लोगों ने नाभि स्पंदन का अतिशय देखा एवं कभी कभी माथे पर रेखायें भी दिखती थी।

जून २०१४ की शुभ बेला में स्वस्तिधाम में प्रतिमा विराजमान करने के लिए लाते समय ५ लोगों के द्वारा आसानी से उठ गई। बाद में स्वस्तिधाम में आने के बाद १०० लोगों से भी नहीं उठी, पर जब माता जी आई तब प्रतिमा हल्की हो गई, और वेदिका में आसानी से विराजमान हो गई, ऐसे अतिशय यहां लगातार होते चले जा रहे थे हैं २६ जुलाई २०१४ को शनि अमावस्या के अवसर पर हजारों भक्तों ने भगवान का अभिषेक किया उसके पश्चात् मंचीय कार्यक्रम चल रहा था। इसी बीच कोटा वालों

द्वारा १००८ दीपक से भगवान की मंगल आरती की गई उसी समय एक दम भगदड़ मच गई उस समय भगवान के नेत्रों से दिव्य रोशनी निकल रही थी और स्वयमेव देवों द्वारा अभिषेक हो रहा था, ये अतिशय ४–५ हजार लोगों ने देखा, यह अभिषेक ३ घंटे तक चला एवं दिव्य रोशनी ५ मिनिट तक निकली, अनेक लोगों ने अनुपम दृश्य के फोटो खीच लिए। वे सभी लोग धन्य हुए जिन्होंने ये अतिशय अपनी आंखों से देखें। मुझे भी एक छोटे से कक्ष में विराजित भगवान को देखने का अवसर मिला है।

इय नवोदित अतिशय क्षेत्र के विकास की यात्रा १२ बीघा जमीन से प्रारंभ हुई, आज क्षेत्र के पास ५५ बीघा जमीन है, क्षेत्र पर अनेक कार्य योजनाएं मूर्तरूप लेने लगी। धीरे–धीरे क्षेत्र का प्रचार होने लगा देश के हर भाग से लोगों का तांता लगने लगा। यहां तक की विदेशों से भी लोग आने लगे। पारस चैनल पर १२ जुलाई २०१५ से प्रतिदिन अभिषेक का कार्यक्रम प्रसारित होने लगा जिसमें लोग भगवान की छवि देखकर मोहित होने लगे, क्षेत्र पर निर्माण कार्य निरंतर प्रगति कर रहा है। स्वस्तिधाम जहाजपुर क्षेत्र ने माताजी को ऐसा जकड़ रखा है कि जब–जब माता जी विहार करती हैं उन्हें लौटकर आना पडता है, यहां रहकर माता जी की संयम साधना एवं विशुद्धि वृद्धिगत हो रही है। भगवान के चमत्करों के साथ माताजी के निर्देशन में दूरदर्शी एवं उच्चस्तरीय सोच ने ऐसा इतिहास रचा कि छोटा सा जहाजपुर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति को प्राप्त कर चुका है, माता जी के मधुर प्रवचन एवं असीम वात्सल्य ने समस्त जैन समाज को भक्ति से जोड़ा है, कहीं भी जाओ सभी जगह एक ही चर्चा स्वस्तिधाम तीर्थ की चलती है, जैन समाज का हर व्यक्ति यहां आने को लालायित रहता है। माताजी की भावनानुसार सन् २०२० में २०वें तीर्थंकर का विशाल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अद्भुत अद्वितीय रहा जिसमें लाखों व्यक्ति ने आकर यहां की भव्यता को निहारा। परम पूज्य सराकोद्धारक राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में ७ फरवरी २०२० को नवनिर्मित जहाज मंदिर की स्वर्णिम वेदिका पर भी मुनिसुव्रतनाथ भगवान को विराजमान किया गया। इसी महोत्सव में आ. स्वस्तिभूषण माताजी को पूज्य आचार्य श्री द्वारा गणिनी पद से विभूषित किया गया। उस समय भी भगवान फूल जैसे हल्के हो गये लगा जैसे देवीय शक्ति काम कर रही हो। आठ दिन तक पारस चैनल पर सीधा प्रसारण हुआ, लोगों ने घर बैठकर कार्यक्रम को सराहा टी.वी. के सामने लोग टकटकी लगाये बैठे रहे। स्वस्तिधाम में यात्री आवास एवं भोजन एवं कैंटीन की उत्तम व्यवस्था है। आचार्य सुमतिसागर यात्री निवास में सर्व सुविधा युक्त १०८ कमरे १२ बड़े हॉल है। तथा मांगलिक भवन में सर्वसुविधा युक्त ५५ कमरे एवं एक विशाल सभाकक्ष है। संतों के प्रवास हेतु सुन्दर संत निवास है। मंगल स्वस्ति चक्र, चंदनबाला भवन, सुन्दर स्वच्छ सुव्यवस्थित भोजनशाला में सुस्वादु भोजन परोसा जाता है। रंगीन फव्वारे, विविध रंगों से सुसज्जित विद्युत प्रकाश में नहाया जहाज मंदिर, मानस्तंभ, कलात्मक द्वार, स्वागत करता हुआ कार्यालय, नयन हारी मुख्य कुबेर द्वार आदि सभी निर्माण इस क्षेत्र को अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा ज्यादा आकर्षक एवं आरामदायक बनाते है। यहां पधारे श्रद्धालुगण असीम शांति एवं आनन्द का अनुभव करते हैं, न भूलने वाली स्मृतियों को हृदय में संजोकर ले जाते है। जहाज मंदिर में प्रत्येक शनिवार, रविवार को विशेष अभिषेक शांतिधारा होती है। समय समय पर भक्तों द्वारा चालीसा पाठ एवं विधान आयोजित किये जाते हैं। प्रत्येक शनि अमावस्या का विशाल मेला व विशेष अभिषेक महाशांतिधारा एवं अन्य कार्यक्रम होते हैं। एक बार जहाजपुर तीर्थ आकर आप सभी अपने जीवन को धन्य करें।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन का अंचलों का भ्रमण

महाराष्ट्र अंचल

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की महाराष्ट्र अंचल की बैठक ३ दिसंबर, २०२४ को पुणे के पिम्परी क्षेत्र में परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य १०८ आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य युगल मुनिराज श्री अमरकीर्तिजी, श्री अमोघकीर्ति जी महाराज के सान्निध्य में दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जम्बू प्रसाद जैन जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री संजय जैन पापड़ीवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक जैन दोशी, शतकोत्तर रजत जयंती के चैयरमेन एवं उ.प्र.-उत्तराखंड़ अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन, महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री मिहिर बाहुबली जैन गाँधी जी मंच पर उपस्थित रहे।

महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री मिहिर भाई, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रवि देवमोरे, अंचलीय महामंत्री श्री ओम पाटनी, और महिला अध्यक्षा सौ. सुजाता जी शाह द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों का शाल, साफा, माला एवं बुके देकर स्वागत किया गया।

श्री अमोघकीर्ति जी महाराज ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारी आज यहां आये और उन्होंने अपनी महाराष्ट्र अंचल की इकाई का गठन किया। आशा करता हूँ कि महाराष्ट्र अंचल की यह कमेटी तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण एवं विकास में निरन्तर कार्यरत रहेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संजय जैन पापड़ीवाल जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन समाज एक समृद्ध एवं ऊर्जावान समाज है ऐसे समाज के तीर्थक्षेत्रों की रक्षा करने का कार्य करने वाली तीर्थक्षेत्र कमेटी का हमें तन-मन-धन से सहयोग करना होगा।

शतकोत्तर रजत जयंती के चैयरमेन एवं उ.प्र.-उत्तराखंड़ अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन, जी ने १२५वें स्थापना वर्ष महोत्सव की जानकारी देते हुये बताया कि २२ अक्टूबर, २०२६ को महोत्सव वर्ष का शुभारम्भ मथुराचौरासी से होगा, २२ अक्टूबर, २०२७ को श्री सम्मेदशिखरजी में महोत्सव का समापन किया जायेगा। श्री जवाहरलाल जैन जी ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी को आज आर्थिक रूप से मजबूत करने का हम सभी का दायित्व है।

अंचलीय महामंत्री श्री ओम पाटनी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय पदाधिकारियों को मैं विश्वास दिलाता हूँ कि महाराष्ट्र अंचल की नव निर्वाचित कमेटी सदैव केन्द्रीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के दिशा-निर्देशानुसार कार्य करती रहेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया से नव निर्वाचित महाराष्ट्र अंचल की कमेटी को गोपनीयता की शपथ दिलायी एवम् उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तीर्थक्षेत्रों की रक्षा के लिये

संकल्पित है, हम सब यदि संगठित हैं तो हम बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान कर सकते हैं, संगठन का कार्य करना ईश्वरीय कार्य के समान होता है, हम सभी का सौभाग्य है हम सभी इस ईश्वरीय कार्य से जुड़े हैं, सभी का आभार प्रकट करते हुये माननीय जम्बू प्रसाद जैन जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ बैठक का समापन किया।

गुजरात अंचल का भ्रमण

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुजरात अंचल की बैठक दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी की अध्यक्षता में अहमदाबाद में प्रारम्भ हुई, बैठक में मुख्य अतिथि मेयर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन, अहमदाबाद विशिष्ट अतिथि श्री श्रीपाल जैन ट्रस्टी, आनन्द जी कल्याण जी ट्रस्ट, गुजरात अंचल के परम संरक्षक श्री सौभाग्यमल जैन कटारिया जी, श्री जवाहर लाल जी, श्री पारस जैन 'बज' अध्यक्ष, गुजरात अंचल, बैठक का संचालन आंचलीय महामंत्री, श्री ऋषभ जैन जी द्वारा किया गया।

श्री सौभाग्यमल जैन कटारिया जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रत्येक मंदिर एक निश्चित राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को दें, महामंत्री इस विषय की रूपरेखा बनाने के लिये अतिशीघ्र गुजरात अंचल की मीटिंग बुलायें।

महालक्ष्मी चैनल के संचालक श्री शरद जैन जी ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र के १२५वें स्थापना दिवस के कार्यक्रमों के संबंध में तथा श्री गिरनार जी के वाद की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया।

श्रीपाल भाई जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि जैन समाज संगठित होकर चलेगा तो देश के अन्दर हमारी आवाज सुनी जायेगी।

अंचलीय अध्यक्ष श्री पारस जैन 'बज' जी ने अपने उद् बोधन में कहा कि महालक्ष्मी चैनल के संचालक श्री शरद जैन जी के पूर्व के वक्तव्य पर जिसमें उन्होंने श्री गिरनार के वाद पर ८ करोड़ रूपये का खर्च बताया था। उस पर हमें आपत्ति है, जबकि उस वाद को मैं स्वयं लगभग १० वर्षों से देख रहा हूँ। मेरे अनुसार उस वाद पर लगभग ८ लाख रूपया भी नहीं खर्च हुआ है। अतः श्री शरद जैन जी से निवेदन है कि दिये गये वक्तव्यों से समाज में भ्रांति पैदा होती/हुई है। कृपया अपने चैनल के द्वारा दिये गये वक्तव्यों का खंड़न करने का कष्ट करें।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी ने अपने उद्बोधन में

कहा कि आज भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है क्योंकि आज के आधुनिक युग में अन्य संस्थायें प्रचार-प्रसार में हमसे बहुत आगे हैं, कमेटी को मजबूत करना हम सभी का दायित्व है।

बैठक में काफी अच्छी उपस्थिति रही, लगभग २० आजीवन सदस्यों की स्वीकृति भी प्राप्त हुई। लोकतंत्र प्रक्रिया से नव निर्माण गुजरात अंचल की समिति का गठन किया गया। गुजरात अंचल के सभी सदस्यों को माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन जी ने गोपनीयता की शपथ दिलायी।

तमिलनाडु एवं कर्नाटक प्रवास

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन जी एवं शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति के चैयरमेन श्री जवाहर लाल जैन जी १७ नवम्बर, २०२४ को कर्नाटक अंचल की बैठक हेतु पॉण्डीचेरी प्रवास पर गये। पॉण्डिचेरी में विजयमति मण्ड़प में ५ राज्यों के दक्षिण जोन अंचल के लोकतंत्र प्रक्रिया के तहत चयनित नव नियुक्त पदाधिकारी, सदस्य एवं विशेष आमंत्रित सदस्यों को संस्था एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की शपथ दिलायी गयी। माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि आज इच्छा शक्ति और प्रचार-प्रसार से ही संस्था चल सकती है। संतवाद-पंथवाद ऐसा विशैला बीज है जिसे अब निकालना बहुत जरूरी हो गया है।

श्वेताम्बर कमेटी नहीं चाहती शिखरजी विवाद खत्म हो-

४० साल बाद भी सुप्रीम कोर्ट की ड़बल बैंच के सामने प्रतिवादी नहीं चाहते हैं कि शिखरजी जी का वाद समाप्त हो। अगस्त,२०२४ में १२ दिनों में केवल ९ दिन ही सुनवाई हुई जिसमें साढ़े आठ दिन काल्याण जी पेढ़ी ने ही ले लिये। माननीय न्यायधीश भी चाहते हैं कि वाद शीघ्र समाप्त हो। वाद में समाज का धन निरर्थक व्यय हो रहा है।

१२५ वें शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति के चैयरमेन श्री जवाहर लाल जैन जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम लोग अपनी सिल्वर-गोल्ड़न- डायमंड जुबली मनाते हैं उसी तरह अब तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने १२५ वर्ष पूरे होने पर शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष मनायेगी, बिना टूटे अनवरत १२५ वर्ष चलना भी बड़ी उपलब्धि है। तीर्थों की सुरक्षा कोई और नहीं हम सभी को मिलकर करनी होगी। आज माननीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जी के कंधे मजबूत करने की हम सबकी जिम्मेदारी है। १२५ वर्ष मनाने के बहाने, हमको अपनी संस्कृति बचाने का अवसर मिला है।

दक्षिण अंचल के प्रवक्ता श्री सुनील काला ने कहा कि हर परिवार को हजार-हजार रूपये का सहयोग कर तीर्थक्षेत्र कमेटी को मजबूत करना होगा, वहीं अंचल अध्यक्ष संजय ठोलिया ने विभिन्न मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिये हर संभव सहयोग की अपील की।

अजमेर के भाजपा जिला प्रमुख श्री पुखराज जी पहाड़िया ने कहा कि सरकारी जनसंख्या में हमारी गिनती कम है। आज सिर कटाने से ज्यादा सिर गिनाने की जरूरत है।

सोहनलाल कासलीवाल जी का उद्बोधन -खंड़ेलवाल दिगम्बर जैन मंदिर के अध्यक्ष सोहनलाल कासलीवाल जी ने कहा कि एकता के लिये पंथवाद खत्म करना होगा। मान्यताओं में परिवर्तन ना हो, कोई साधु आकर मंदिर की

परंपरा में परिवर्तन ना करे।

तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने दिया सहयोग- दक्षिण अंचल के माध्यम से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी ने अहिंसा वाक के सचिव धनंजय जी को तीर्थों के संरक्षण के लिये गुड़लूर जैन मंदिर को रंग रोगन आदि के लिये तथा वेल्लूर के पास अंगमपाकम में खेत से मिली मूर्ति एवम् स्कूल में रखी महावीर जी की मूर्ति के लिये मंदिर बनाने के उद्देश्य से पूर्व एसीपी राजेन्द्र प्रसाद जी को सहयोग राशि दी।

श्री शरद जी द्वारा उद्बोधन - चैनल महालक्ष्मी के संचालक श्री शरद जैन जी द्वारा इस अवसर पर १२५ वें स्थापना वर्ष महोत्सव की जानकारी देते हुए बताया कि २२ अक्टूबर, २०२६ को महोत्सव वर्ष की शुरूआत मथुरा चौरासी से होगी, सम्मेदशिखर जी में २२ अक्टूबर, २०२७ को समापन होगा। ९वीं सदी का चिथराल दिगंबर जैन तीर्थ, तमिलनाडु राज्य के

कन्याकुमारी जिले में चिथराल गांव की पहाड़ी पर स्थित है, जिसे भारतीय पुरातत्व विभाग भगवती मंदिर कहता है। हाल ही में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन एवं दक्षिण के ५ राज्यों के अंचल अध्यक्ष श्री संजय थोलिया के साथ चैनल महालक्ष्मी ने यहां की यात्रा कर पूरी सच्चाई जानी। जानकारी में आया कि यहां पर भी अन्य धर्मावलम्बियों द्वारा अतिक्रमण का प्रयास किया जा रहा है। अगले अंक में पूरी जानकारी देने का प्रयास रहेगा।

गणिनी आर्यिका गुरूनंदनी माताजी के सानिध्य कन्याकुमारी में समुद्र किनारे बन रहा दिगम्बर जैन मंदिर-

मंदिर में यात्रियों के ठहरने व शुद्ध भोजन के लिये भोजनालय की व्यवस्था भी होगी। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बूप्रसाद जैन, उ.प्र.-उत्तराखंड़ अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन, दक्षिण अंचल के अध्यक्ष संजय ठोलिया व चैनल महालक्ष्मी के संचालक श्री शरद जैन जी को उन्होंने चिश्राल, विद्धलवासल, कालुगुमलाई आदि सभी तीर्थों की बदहाली के बारे में बताते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक और संगठन रूप से मजबूत करने की अपील की।

कर्नाटक में श्रवणबेलगोल जैन मठ-तीर्थ सुरक्षा में अग्रणी भूमिका निभाएगा-

कर्नाटक में कई मंदिरों को जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्थापना के १२५वें शतकोत्तर रजत दिवस

के कार्यक्रमों में श्रवणबेलगोल जैन मठ में कुछ राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित करने के साथ कर्नाटक तीर्थों की सुरक्षा में अग्रणी भूमिका निभाने की बात चारूकीर्ति स्वामी जी ने कही।

आने वाले खतरे से बचने के लिये हर तीर्थक्षेत्र कागजात पूरे कर लें- आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी।

उन्होंने कहा कि जैन संस्कृति-धर्म पर आने वाले समय में एक नया खतरा आने की आशंका है। सभी दिगंबर जैन मंदिर-तीर्थक्षेत्र आवश्यक कागजात पूरे कर लें, अगर अधूरे हैं तो पट्टेदार, तहसीलदार, ग्राम पंचायत से मिलकर अपने सभी कागजात पूरे कर लें, वरना आने वाले समय में अधूरे कागजात होने पर अत्याधिक अतिक्रमण-कब्जे होने की प्रबल संभावना है।

मध्यांचल कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

कर्तव्य निष्ठा के साथ अपने पद के दायित्व का निर्वहन करें : न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन

तीर्थ मंदिर में दान पेटी रखकर तीर्थक्षेत्रों की धरोहर का संरक्षण करें : श्री जम्बूप्रसाद जी

बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र श्री अहारजी की पावन भूमि पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी–मध्यांचल के पदाधिकारियों का पद ग्रहण समारोह न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जी जैन भोपाल (अवकाश प्राप्त न्यायाधीश, म.प्र. उच्च न्यायालय जबलपुर) के मुख्य आतिथ्य एवं कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन की अध्यक्षता में विभिन्न कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ। जिसमें न्यायायिक, प्रशासनिक अधिकारी,

जनप्रतिनिधि, राष्ट्रीय कमेटी के पदाधिकारी, विशिष्ट अतिथियों की मंच पर गरिमामयी उपस्थिति तथा मध्यांचल के अनेक जैन तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारी व प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के प्रचार प्रमुख श्री राजेश जैन 'रागी' ने अपनी विज्ञप्ति में बताया कि गरिमामय समारोह के प्रथम सत्र की शुरुआत त्रिकाल चौबीसी के विशाल भव्य जिनालय में विराजमान मूलनायक भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ व अरहनाथ की विशाल भव्य प्रतिमाओं का अतिथियों द्वारा मस्तकाभिषेक, शांतिधारा, दीप प्रज्ज्वलन और संगीतमय सामूहिक पूजन, तीर्थ वंदना तथा अहार जी में संचालित गुरुकुल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण के साथ की गई।

पदाधिकारियों को तीर्थ हित की दिलाई शपथ

इस समारोह की मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जी जैन ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के पंचवर्षीय (२०२४–२८ कार्यकाल) के लिए निर्विरोध नवनिर्वाचित अध्यक्ष, कार्याध्यक्ष, मनोनीत संरक्षक, सलाहकार, परामर्शदाता, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष, चेयरमेन, मंत्री, प्रचार प्रमुख, प्रवक्ता सहित पचास से अधिक पदाधिकारियों को मध्यांचल के अंतर्गत तीर्थक्षेत्रों की धरोहरों के हित संरक्षण, संवर्धन, जीर्णोद्धार, सुरक्षा, विकास के लिए समर्पित रहने तथा कमेटी के संविधान व निर्देशों के पालन तथा अपने पद के दायित्वों का निर्वहन करने की शपथ दिलाई गई। जिसमें नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री डी.के. जैन का शपथ ग्रहण का आकर्षण अनूठा रहा, जिसमें संगीत की ध्वनि पर मध्यांचल के पदाधिकारियों व तीर्थक्षेत्र के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक मंच पर ससम्मान ले जाकर उन्हें शपथ ग्रहण कराई।

पश्चात् श्री डी.के. जैन ने सभी अंचल के पदाधिकारियों एव विभिन्न क्षेत्रों की कमेटी के सदस्यों को बड़े उत्साह के साथ शपथविधि पूर्ण करवाई। शपथविधि के पश्चात् माननीय न्यायमूर्ति विमलाजी एवं न्यायमूर्ति अरविन्द जी ने पूरी अंचल कमेटी को अंचल के सभी क्षेत्रों के दौरे कर वहां के संवर्धन, संरक्षण और विकास के साथ साथ उनकी सुरक्षा हेतु प्रेरित करने का निवेदन किया, साथ ही बधाई दी और उम्मीद व्यक्त की कि आप अपने कार्यकाल में श्रेष्ठतम कार्य करेंगे। अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी ने सभी तीर्थक्षेत्रों पर दान पेटी रखना और अधिक से अधिक सदस्यों को जोड़ने का निवेदन किया तथा वर्तमान में शिखरजी, गिरनारजी सहित अनेकों तीर्थक्षेत्रों के केस हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट में चल रहे है जिससे बहुत अधिक धन खर्च होता है। इस मंच से आप सभी से निवेदन करूँगा कि आप एक एक रूपया प्रतिदिन दान देकर कमेटी को मजबूत बनाऐं।

हम सभी दृढ़ संकल्पित है कि हम क्षेत्रों का विकास करने में अपने संसाधनों का उपयोग करेंगे। श्री डी.के. जैन पूर्व एवं वर्तमान अध्यक्ष, तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल ने स्वागत एवं अध्यक्षीय भाषण दिया। आपने बताया कि हमने पूर्व में भी अनेकों बार बुंदेलखंड में स्थित तीर्थक्षेत्रों के दौरे कर कुछ तीर्थक्षेत्रों को केन्द्र से सहयोग दिलवाया पर वह सहयोग मात्र चीटी के बराबर ही रहा। अंचल में हमारी कमेटी के पास संसाधन बहुत ही सीमित है और क्षेत्रों की आवश्यकताएँ बहुत बड़ी है सभी क्षेत्रों में सहयोग अपेक्षित है यदि केन्द्र अंचल को पर्याप्त राशि प्रदान करें तो हम सभी क्षेत्रों को अपना सहयोग देने का प्रयास करेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष जी से निवेदन है कि वे हम और हमारे तीर्थक्षेत्रों को अनुदान स्वरूप कुछ सहयोग प्रदान करे। पूर्व के कार्यकाल में हमने छत्री का, सन्तसदन का निर्माण, सी.सी. कैमरा, लगभग ३५ वाटर कूलर और वांशिग मशीनें क्षेत्रों को उपलब्ध करवाई है। वाटर कुलर और वाशिंग मशीन एक अनुठी योजना जिसके अंतर्गत इन्दौर नगर के घर घर से रद्दी और अनुपयोगी सामान एकत्रित कर उससे प्राप्त धन राशि के सहयोग किया गया। इस प्रकार अनेकों जैन परिवारों को क्षेत्रों से जोड़ रहे हैं। आप सभी अतिथिगण और उपस्थित अनेकों तीर्थक्षेत्रों की कमेटियाँ और उसके पदाधिकारीगणों, अंचल के वर्तमान और पूर्व के पदाधिकारियों का हार्दिक स्वागत व सम्मान करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि आप सभी सम्मानीय सदस्यों के सहयोग से हम आगामी पाँच वर्षों तक तीर्थों की सेवा कर सके तो हमारा जीवन सफल हो सकेगा।

शपथ उपरांत मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जी जैन एवं विशिष्ट अतिथि जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री अरविन्द जी जैन सहित अतिथियों ने मध्यांचल के सभी पदाधिकारियों को बधाई शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि 'आप सभी मध्यांचल के सभी पावन तीर्थों का चहुंमुखी विकास करें और कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपने पद के दायित्व का निर्वहन करें, मिलजुलकर कर्मठता, निष्पक्षता, संवेदनशीलता से तीर्थों के कार्य को गति देकर पुण्यार्जन कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करें।

कार्याध्यक्ष श्री संतोष जैन (घड़ी) ने भी आश्वासन दिया कि हम सभी क्षेत्रों में दौरे कर आवश्यक संसाधन जुटायेंगे अंत में श्री राजकुमार जैन घाटे ने मंच पर उपस्थिति सभी सम्मानीय अतिथिगणों एवं सभी पदाधिकारियों का आभार प्रगट किया। तत्पश्चात् प्रथम केविनेट की बैठक प्रारंभ हुई जिसमें अध्यक्ष श्री डी.के. जैन और सभी केविनेट सदस्यों ने १३ प्रस्ताव पारित किये गये।

प्रथम केबिनेट बैठक में क्षेत्र हित में लिए निर्णय

प्रस्ताव :

१. वर्ष में अंचल के तीर्थक्षेत्रों का किसी भी तीर्थक्षेत्र पर अधिवेशन रखा जायेगा।

२. वर्ष में कार्यकारिणी समिति की कम से कम दो मिटिंग तीर्थक्षेत्र पर रखी जायेगी।
३. अंचल के सभी तीर्थक्षेत्रों पर वहां की कमेटी से निवेदन करके राष्ट्रीय समिति के निर्देश पर एक दान पेटी रखी जायेगी।
४. सभी तीर्थक्षेत्रों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की प्रतिबद्धता एवं निर्देशों का बोर्ड लगाया जाये, संसबंधित तीर्थक्षेत्र की कमेटी के पदाधिकारीगण जैसे अध्यक्ष, महामंत्री और कोषाध्यक्ष के नाम के साथ।
५. प्रत्येक क्षेत्र के जमीनी एवं शासकीय परमिशन के तहत समस्त कागजातों का विधिवत डाक्यूमंटेशन किया जाये, तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा हेतु बाउंड्रीवाल बनाने हेतु अभियान चलाकर प्रेरित किया जाये जिससे क्षेत्र सुरक्षित हो सके।
६. अंचल में होने वाले सभी संतों के चातुर्मास में एक कलश तीर्थक्षेत्र कमेटी के स्थापित किये जाने हेतु निवेदन किया जायेगा।
७. अंचल के जिन तीर्थक्षेत्रों पर अंचल की ओर से वाटर कूलर नहीं पहुँचे है वहाँ पर अनुठी योजना के अंतर्गत व्यवस्था की जायेगी।
८. हमें अंचलों के तीर्थक्षेत्रों पर जो भी व्यवस्थायें चल रही है उसमें यदि शासन प्रशासन से कुछ सहयोग चाहिए तो हमें अपने स्वयं के संबंधों से अथवा अन्य स्त्रोतों से पूरा करने में मददगार बनना होगा। द्रौणागिर क्षेत्र पर पूर्व में संचालित सेंटर को पुन: प्रारंभ किया जाने हेतु एक ज्ञापन स्वरूप रिपोर्ट भी राष्ट्रीय अध्यक्ष को प्रेषित की गई।
९. शासन प्रशासन से एवं दानदाताओं अथवा अन्य विभाग से सहयोग लेकर तीर्थक्षेत्रों के विकास हेतु अनुदान दिलवाने का प्रयास किया जायेगा।
१०. हमारे अंचल के बड़े बड़े उद्योगपति, प्रशासन में कार्यरत अधिकारीगणों से भी सहयोग लेकर उन्हें तीर्थक्षेत्रों के विकास हेतु तैयार करना।
११. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त अनुदान को आवश्यकतानुसार प्रदान किया जायेगा।
१२. सभी सदस्य मिलकर आगामी चार माह तीर्थक्षेत्र कमेटी में १०–१० नये सदस्य रु.११०००/– के बनवायेंगे।
१३. सभी क्षेत्रों पर त्यागीवृतियों के कपड़े विधिवत साफ हो सके इस हेतु कमर्शियल वाशिंग मशीन इन्दौर में सचालित अनूठी योजना से प्राप्त राशि से मोहया करवाने की योजना है। सम्पूर्ण मध्यांचल के जैन बाहुल्य क्षेत्रों पर भी अनूठी योजनाएँ संचालित कर इस योजना का विस्तार करना। शेष कार्य आप सभी के सुझावों से आगामी मीटिंग में जोड़े जायेंगे।

इस मौके पर विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश जैन आईएएस भोपाल, वीरेश सेठ राष्ट्रीय मंत्री, जैनेश झांझरी चेयरमेन–तीर्थ सर्वेक्षण उपसमिति और संवर्धन, सुरेन्द्र बाकलीवाल व अमित जैन जैनको अध्यक्ष नव निर्माण एवं जीर्णोद्धार कमेटी सहित अनेक अतिथियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने केन्द्रीय मंत्री राजनाथसिंह को क्षेत्र संरक्षण के लिए दिया ज्ञापन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन जी के नेतृत्व में तीर्थक्षेत्र कमेटी के एक प्रतिनिधि मंड़ल ने 30 नवंम्बर, 2024 को श्री राजनाथ सिंह माननीय रक्षामंत्री, भारत सरकार, नई दिल्ली से मिलकर माननीय राजनाथ सिंह जी से श्री गिरनारजी, श्री सम्मेदशिखरजी एवं अन्य जैन तीर्थक्षेत्रों के संबंध में चल रहे विवादों एवं सरकार के रवैये के संबध में चर्चा करते समय उन्हें बताया कि दिगम्बर जैन समाज सरकार के वर्तमान रवैये से संतुष्ट नहीं है, न्यायालय से आदेश पारित होने के पश्चात भी व्यावहारिक रूप से उनका पालन नहीं हो पा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप जैन समाज का मतदाता भारतीय जनता पार्टी से शनै-शनै अलग हो रहा है। आपसे निवेदन है कि अल्पसंख्यक में भी अल्पसंख्यक अर्थात अति अल्पसंख्यक जैन समाज की विषय वस्तु पर सरकार गम्भीरता से विचार करे, जिससे जैन समाज निर्भीक होकर अपने तीर्थक्षेत्रों में पूजन, वंदन एवं दर्शन इत्यादि कर सके।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी

Bhartvarshiya Digambar Jain Tirth Kshetra Committee

द्वितीय तल, हीराबाग, सी.पी. टैंक,
कस्तूरबा गांधी चौक, मुम्बई 400004, मो. 9833671770, 7738383535

जम्बू प्रसाद जैन, गाजियाबाद
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मे. 98101 80510

संतोष जैन पेंढारी, नागपुर
राष्ट्रीय महामंत्री
मो. 98222 25911

प्रदीप जैन (पीएनसी), आगरा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 98370 56653

सुरेश जैन (TMU), मुरादाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 98370 40040

नीलम अजमेरा, उस्मानाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 78880 51008

विजय जैन, अहमदाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 98250 07495

संजय पापड़ीवाल, औरंगाबाद
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
मो. 098220 18699

अशोक दोशी, मुम्बई
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
मो. 98204 30114

जय कुमार जैन, कोटावाले, जयपुर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 94140 68250

वीरेश सेठ, जबलपुर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 94250 95618

हसमुख जैन गांधी, इन्दौर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 93021 03513

डॉ. जीवन प्रकाश जैन, हस्तिनापुर
राष्ट्रीय मंत्री
मो. 94110 25124

तीर्थरक्षार्थ दानपात्र 'गुल्लक' योजना

तीर्थ क्षेत्र कमेटी सम्पूर्ण भारत के तीर्थ क्षेत्रों के विकास, संवर्धन, संरक्षण, जिर्णोद्धार आदि कार्य पिछले 125 वर्षों से कर रही है। साथ ही अनेक वर्षों से सम्मेद शिखरजी, गिरनारजी, शिरपुरजी, केशरियाजी आदि तीर्थों के कोर्ट केश सुप्रीम कोर्ट में लड़ रही है।

उपरोक्त पुनीत कार्य सम्पूर्ण समाज की सहभागिता एवं समर्थन से ही संभव है। तीर्थ क्षेत्र कमेटी **समस्त तीर्थों एवं मन्दिरों में दान पात्र (गुल्लक)** रख रही है। आप अधिक से अधिक अपने निकट के मन्दिर में **'तीर्थ क्षेत्र कमेटी'** द्वारा रखी **गुल्लक** में दान राशि डालकर तीर्थों के संरक्षण का पुण्य प्राप्त करें।

निवेदन : मंदिरों एवं तीर्थों के पदाधिकारी गुल्लक हेतु कृपया सम्पर्क करें।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मो. 9810180510

सन्तोष जैन पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री
मो. 9822225911

हसमुख जैन गांधी, इन्दौर
चेयरमेन, गुल्लक योजना समिति
मो. 93021 03513

:: सम्पर्क अंचलिय अध्यक्ष एवं मंत्री ::

पूर्वांचल -	श्री कन्हैयालाल सेठी, औरंगाबाद	94312 23893	कर्नाटक -	श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर	99004 20001
	श्री प्रभात कुमार सेठी, गिरिडीह	94311 67498		श्री अभिनंदन कोचेरी, बेलगाँव	9448339730
गुजरात -	श्री पारस वज, अहमदाबाद	98250 30311	मध्यांचल -	श्री डी.के. जैन, इंदौर	98270 96093
	श्री ऋषभ जैन, अहमदाबाद	98250 76721		श्री राजकुमार घाटे, इंदौर	9425317254
राजस्थान -	श्री राजकुमार कोठ्यारी, जयपुर	94140 48432	तमिलनाडु	श्री संजय ठोलिया, पांडिचेरी	94436 16595
	श्री मनीष वेद, जयपुर	94140 16808	पांडिचेरी -	श्री एस. श्रेणिकराज जैन, टिंडीवाना	79041 65960
उत्तर प्रदेश -	श्री जवाहर जैन, सिकंदराबाद	94112 45100	महाराष्ट्र -	श्री मिहिर गांधी, अकलूज	96370 73395
	श्री सन्देश जैन, बिलासपुर	70170 56876		श्री ओम पाटनी, इचलकरंजी	93720 43670
दिल्ली -	श्री प्रदुमन जैन, दिल्ली	98112 21008			
	श्री सुनिल जैन, दिल्ली	98100 18107			

खाता का नाम : भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
बैंक का नाम : बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी. रोड़ ब्रांच, मुंबई
खाता क्र. : 13100100008770, IFSC : BARBOVPROAD